SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 08 • OCTOBER 2022

हिन्दी मासिक

अक्तूबर 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

रबीउल–अव्वल का महीना

रबीउल–अव्वल का महीना बहार का महीना है, यही वह महीना है जिसमें इन्सानियत की खेती लहलहाई, यही वह महीना है जिसमें अल्लाह के अन्तिम नबी और सन्देष्टा नबी करीम सल्लल्लाहु औहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ लाये, जिनके द्वारा मानव और मानवता को वास्तविक सम्मान मिला और आदर्श मानव समाज की परिपूर्ण रचना हुई।

(हज़रत मौलाना सय्यद मु. राबे हसनी नदवी)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अक्तूबर 2022 वर्ष 21 अंक 08

नबी-ए-रहमत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें ग़रीबों की बर लाने वाला
मुसीबत में ग़ैरों के काम आने वाला
वह अपने पराये का ग़म खाने वाला
फ़क़ीरों का मलजा, ज़ईफ़ों का मावा
यतीमों का वाली, गुलामों का मौला
ख़ता कार को दरगुज़र करने वाला
बद अंदेश के दिल में घर करने वाला
मफ़ासिद को ज़ेरो ज़बर करने वाला
क़बाएल को शीरो शकर करने वाला
उतर कर हिरा से सू-ए-क़ौम आया
और इक नुसख़-ए-कीमिया साथ लाया

(मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की प्रमुख	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने आचरण	हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्म राबे हसनी नदवी	11
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
अल्लाह के रसूल सल्ल0 की शिक्षायें	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी रह0	15
ऐ नामे मुहम्मद सल्ल0 (पद्य)	महिरुल क़ादरी	16
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	17
हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बारे में	इं0 जावेद इक़बाल	20
सलाम (पद्य)	डॉ0 नवाज़ देवबन्दी	22
संवैधानिक मूल्य और इस्लाम धर्म	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	24
फूँकों से यह चराग़	जमाल अहमद नदवी	29
पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनमोल	इदारा	31
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	32
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	35
एक यादगार नात	इदारा	37
मोमिन की जाये पनाह	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	38
शरीर में पानी की कमी से	इदारा	39
जायका बढ़ाए और सेहत बनाए	डॉ0 मनीराम	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअ्नि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

वे तौबा करने वाले, बन्दगी करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रूकू करने वाले, सज्दे करने वाले, भलाई की बात कहने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले और ईमान वालों को शुभ समाचार सुना दीजिए[1](112) पैग़म्बर के लिए और ईमान वालों के लिए (अच्छा) नहीं कि वे शिर्क करने वालों के लिए माफ़ी मांगें चाहे वे उनके संबंधी ही क्यों न हों जबकि उन पर खुल चुका कि वे दोज़ख वाले हैं[2](113) और अपने पिता के लिए इब्राहीम का माफ़ी मांगना तो केवल उस वादे के कारण था जो वे उनसे कर चुके थे फिर जब उन पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वे उनसे अलग हो गए, बेशक इब्राहीम बड़े सहानुभूति करने वाले और सहनशील थे(114) और अल्लाह किसी क़ौम को हिदायत देने (राह दिखाने) के बाद पथ–भ्रष्ट नहीं करता जब तक उनको बता नहीं देता कि वे किन चीज़ों से बचें बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है[3](115) बेशक अल्लाह ही के लिए आसमानों और धरती की बादशाही है, ज़िन्दगी देता है और मारता है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई समर्थक है न मददगार(116) बेशक अल्लाह पैग़म्बर पर और मुहाजिरों और अंसार पर मेहरबान हुआ जिन्होंने कठिन समय में भी पैग़म्बर का साथ दिया जबकि लगता था कि उनमें से कुछ के दिल फिर जाएंगे फिर वह उन पर मेहरबान हुआ बेशक वह तो उन पर बड़ा स्नेही और दयावान है[4](117) और उन तीन पर भी (जिनके मामले) को पीछे रखा गया यहां तक जब धरती अपनी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जानें उन पर दूभर हो गईं और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से सिवाए उसके और कहीं शरण नहीं तो फिर वह उन पर मेहरबान हुआ ताकि वे पलट आएं बेशक अल्लाह ही बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है[5](118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो[6](119) और मदीने वालों के लिए और उनके आस–पास के देहात वालों के लिए (ठीक) नहीं कि वे आपको छोड़ कर पीछे रह जाएं और न यह कि वे अपनी जानों को आपकी जान से अधिक प्रिय समझें, यह इसलिए कि उनको अल्लाह के रास्ते में जो भी प्यास व थकान और भूख लगती है और वे जो भी क़दम काफ़िरों को गुस्से में लाने के लिए उठाते हैं और दुश्मनों को जो भी नुक़सान पहुंचाते हैं उस पर नेक काम लिखा जाता है, बेशक अल्लाह नेक काम करने वालों के बदले को बर्बाद नहीं करता[7](120) और जो भी छोटा बड़ा वे ख़र्च करते हैं और जो घाटी पार करते हैं वह सब उनके लिए लिखा जाता है ताकि वे जो काम भी करते हैं अल्लाह उसका अच्छा से अच्छा

बदला उनको प्रदान कर दे(121) और यह तो नहीं कि मुसलमान सब ही निकल खड़े हों तो क्यों न हर गिरोह में से एक समूह निकले ताकि वह दीन में समझ पैदा करे और ताकि वह अपनी क़ौम को जब उनके पास वापस आए तो ख़बरदार करे शायद वे बाज़ रहें[4](122)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यह उन लोगों के गुण हैं जिन्होंने अल्लाह से अपनी जान व माल का सौदा कर रखा है।

2. जो ख़ुदा के विद्रोही हैं वह चाहे नातेदार ही क्यों न हों उनसे अलग होने को दर्शाया जाए, आगे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ओर से माफ़ी मांगी जा रही है कि उन्होंने अपने बाप के लिए माफ़ी मांगी थी वह उस वादे के कारण था जो उन्होंने उनसे विदा लेते समय किया था फिर जब उनका हिदायत पर न आना मालूम हो गया तो उन्होंने अलग होने का ऐलान कर दिया, पहले दिल की नर्मी के कारण दुआ करते थे फिर जब आस टूट गई तो भी उसको पूरे तौर पर बर्दाश्त किया।

3. ताकि हुज्जत पूरी हो जाए और यह कहने को न रहे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया।

4. यानी तबूक़ युद्ध जिसमें विभिन्न प्रकार की परेशानियां थीं संसाधन का अभाव, लंबी यात्रा, सख़्त गर्मी आदि, लगता था कि अच्छे–अच्छों का साहस जवाब दे जाएगा लेकिन अल्लाह की कृपा से सब साथ रहे।

5. यह तीन लोग कअ़ब पुत्र मालिक, हिलाल पुत्र उमय्या और मुरारह पुत्र रबी थे, सच्चे मुसलमान होने के बावजूद बिना किसी मजबूरी के युद्ध में शामिल न हुए और टाल–मटोल में रह गए, जब हज़रत मुहममद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस आए तो यह लोग पछतावे में थे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर उन्होंने जो सच्चाई थी साफ़ साफ़ बयान कर दी और अपनी कोताही को स्वीकार किया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फैसला किया कि जब तक अल्लाह का कोई आदेश न आ जाए उनसे कोई बात न करे, पचास दिन इसी जुदाई में गुज़र गए, फिर यह तौबा की आयतें उतरीं और उनकी तौबा स्वीकार हुई, हज़रत कअ़ब ने अपना वाकिया ख़ुद विस्तार से बयान किया है जो हदीस की सही किताबों में मौजूद है।

6. यानी सच्चों की संगत रखो और उन्हीं जैसे काम करो।

7. इनमें बहुत से काम अनैच्छिक है लेकिन अल्लाह के यहां उन पर भी सवाब मिलते हैं, आगे इच्छित कार्यों का उल्लेख है तो केवल "कुति–ब ल हुम" कहा गया कि जो भी वे करते हैं सब लिखा जा रहा है और ज़ाहिर है कि वे सब कार्य नेकी समझ कर अल्लाह से निकट होने के लिए ही किये जा रहे हैं।

8. ग़ज़्वों के वर्णन के बीच ज्ञान प्राप्ति के लिए निकलने का वर्णन बड़े ही अच्छे ढंग से किया जा रहा है और इसके लिए "न फ़ र" का शब्द प्रयोग हुआ है जो बहुत महत्वपूर्ण कार्य के लिए निकलने पर बोला जाता है इसी लिए आमतौर पर जिहाद के लिए निकलने को नफ़र कहते हैं, तबूक युद्ध के बाद ही यह आयत उतरी और उसके बाद वाला वर्ष ही "आमुलवुफ़ूद" कहलाता है चारों ओर से लोग आने लगे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से धर्म की बातें सीख कर अपने अपने क्षेत्रों में इस्लाम के प्रचार प्रसार के काम में लगने लगे और क़यामत तक के लिए यह एक नमूना बन गया।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

मुसलमानों की इज़्ज़त–सम्मान का बयानः–

अल्लाह तआ़ला का फरमान है–

अनुवादः– *ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी कौम का मज़ाक (खिल्ली) न उड़ाए, संभव है कि वह उससे बेहतर हो, और न औरतें औरतों की खिल्ली उड़ाएं, संभव है कि वो उनसे अच्छी हों, और दोष न लगाओ एक दूसरे पर, और न एक दूसरे का बुरा नाम रखो, ईमान लाने के बाद बुरा नाम रखना गुनाह है, और जो तौबः (पश्चाताप) न करे वह अत्याचारी हैं।*

(सूरः हुजुरात–11)

आगे इरशाद फरमाता है–

अनुवादः– *ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है, और हमने तुमको कबीलों और समुदायों में बाँट दिया है ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा सम्मान–इज़्ज़त वाला वही है जो सब से ज़ियादा अल्लाह से डरने वाला है, बेशक अल्लाह जानने वाला और खबर रखने वाला है।*

(सूरः हुजुरात–13)

और फरमान है–

अनुवादः– *ऐ ईमान वालो! तुम बचो बहुत सारे (बुरे) गुमानों से, बेशक कुछ गुमान गुनाह हैं, और तुम एक दूसरे की टोह में मत पड़ो, और न एक दूसरे की चुगली करो, क्या तुम में से कोई चाहता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए तो तुम इसको ना पसन्द करोगे।*

(सूरः हुजुरात–12)

और फरमान है–

अनुवादः– *और जो लोग ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों को ऐसे काम (की तोहमत दे कर) जो उन्होंने न किया हो दुःख दें तो उन्होंने बुहतान (लांक्षन) और खुले हुए गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा।*

(सूरः अहज़ाब–58)

और फरमान है–

अनुवादः– *जो आदमी किसी को नाहक क़त्ल करेगा उसने मानो तमाम इंसानों का क़त्ल किया, और जिसने एक जान को ज़िन्दगी दी उसने मानो तमाम इंसानों को ज़िन्दगी दी।*

(अल माइदा–32)

मुसलमान ही सम्मान योग्य हैः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने यौमुन्नहर (कुर्बानी के दिन) लोगों के सामने एक तकरीर फरमाई, आपने फरमाया लोगो! आज कौन सा दिन है? लोगों ने जवाब दिया हुर्मत (सम्मान) का दिन है, फिर आपने पूछा यह कौन सा शहर है? लोगों ने जवाब दिया काबिले एहतराम (सम्मान योग्य) शहर है, आपने पूछा यह कौन सा महीना है? लोगों ने जवाब दिया यह हुर्मत (सम्मान) का महीना है, आप सल्ल0 ने फरमाया तुम्हारा खून, तुम्हारा माल, तुम्हारी इज़्ज़त इस दिन, इस शहर, और इस महीने ही की तरह काबिले

एहतराम और सम्मान योग्य है, बार बार आपने यह फरमाया, फिर सर उठाया और फरमाया ऐ अल्लाह! मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया, ऐ अल्लाह! मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 ने फरमाया खुदा की क़सम! उम्मत के नाम यह हुजूर सल्ल0 की वसीयत (आखिरी पैगाम) है, जो मौजूद हैं उनको चाहिए कि जो मौजूद नहीं हैं इस पैगाम को उन तक पहुँचा दें, तुम मेरे बाद काफिर न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (बुखारी)

अल्लाह की किताब हमारे लिए नमूना और आदर्श हैः–

हज़रत यज़ीद बिन शरीक बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ि0 को मिम्बर पर खुतबा (व्याख्यान) देते हुए देखा, मैंने आपको फरमाते हुए सुना, खुदा की कसम! अल्लाह की किताब कुर्आन के सिवा हमारे पास और कोई किताब नहीं जिसको हम पढ़ें, और हाँ! और जो इस सहीफ़े में है, फिर उसको खोला तो उसमें दियत (हत्या का मुआवजा) दिये जाने वाले ऊँटों की उम्रों का बयान था, और बहुत सारे ज़ख्मों के तावान (मुआवजा) का वर्णन था, और यह था कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया जमानत लेने में तमाम मुसलमान बराबर हैं, उनका एक मामूली आदमी भी जमानत ले सकता है, जिसने मुसलमान से धोखा किया उस पर ख़ुदा के फरिश्तों की और तमाम लोगों की फिटकार है, क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसके फर्ज़ व नफल को कुबूल नहीं फरमाएंगे।

(मुस्लिम)

मोमिन–मोमिन का सहायक और मददगार हैः–

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया मोमिन मोमिन के लिए दीवार की तरह है कि उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत करता है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

ईमान वालों को हर मोमिन के दुःख का एहसास होना चाहिएः–

हज़रत नोअ़मान बिन बशीर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया आपस में मुहब्बत करने, एक दूसरे पर बार बार रहम करने और एक दूसरे पर मेहरबान होने में ईमान वालों का उदाहरण एक जिस्म की तरह है कि जिस्म के एक अंग को तकलीफ़ पहुँचती है तो पूरा जिस्म बुखार और बेचैनी में पड़ जाता है। (बुखारी व मुस्लिम)

मुसलमान भाई की मदद करने से अल्लाह की मददः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि मुसलमान– मुसलमान का भाई है उस पर जुल्म न करे और न उसको हलाकत में डाले, जो अपने भाई की मदद में लगा रहता है अल्लाह उसकी मदद करता रहता है, जो किसी की परेशानी को दूर करेगा, अल्लाह तआला क़यामत की परेशानियों में से एक न एक परेशानी से उसको बचा लेगा, और जो किसी मुसलमान के ऐब को छुपाएगा अल्लाह तआला क़यामत में उसके ऐब को छुपाएगा।

(बुखारी)

मुसलमानों का अपमान और उसका साथ छोड़ने पर रोकः–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि आपस में हसद न करो, दाम पर

शेष पृष्ठ.12...पर

सम्पादकीय

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की प्रमुख विशेषता

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

राष्ट्रीय एवं धार्मिक पक्षपात से रहित हो कर साफ़ और खुले ज़ेहन से सीरते नबवी (हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन चरित्र) का अध्ययन करने वाले भली भांति जानते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नैतिकता के शिक्षक और मानवता के मार्ग दर्शक हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख्य और प्रसिद्ध विशेषता रहमतुल लिल आलमीनी (समस्त सृष्टि के लिए करुणा) है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पूर्ण जीवन क्षमा, दया, प्रेम सद्व्यवहार, सहानुभूति, मानव सम्मान का दर्पण है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा–दीक्षा और सहाबा किराम के साथ आप के व्यवहार का मौलिक सार सहानुभूति रहा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम केवल मुसलमानों के लिए रहमत नहीं अपितु आप सारे जहाँ के लिए रहमत थे, अल्लाह तआला कहता हैः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमने तुमको सारे संसार के लिए दयालुता बना कर भेजा है। (अल–अंबिया–107)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी के अध्ययन से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहमत व करूणा की विशेषता आप के पवित्र जीवन के कामों में प्रभुत्वशाली है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में कितनी कठिन घड़ियाँ और समस्यायें आईं, कितनी मुसीबतों और परेशानियों से आप को गुज़रना पड़ा, लेकिन किसी भी हाल में आपके नैतिक आचरण, सद्व्यवहार प्रेम भावना में कमी नहीं आयी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम की दावत शुरु की तो अपने ही क़बीले के लोगों ने सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें और कष्ट पहुँचाया, आप का बाईकाट किया गया सच्चाई के रास्ते में रोड़े अटकाये गये, लेकिन हर हाल में आपकी करुणा और दया की भावना ऊपर रही, आपकी यह विशेषताएं केवल आप तक सीमित न थीं बल्कि आपकी शिक्षा और व्यवहार के प्रभाव से सहाबा किराम भी इसी रंग में रंगे हुए थे पवित्र कुर्आन कहता हैः–

रहमान के प्रिय बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रता पूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह लगते हैं तो कह देते हैं ''तुम को सलाम!'' जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं, जो कहते हैं कि ''ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे।'' निश्चय ही उसकी यातना चिमट कर रहने वाली है। निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी। जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग पर रहते हैं। जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक़ किसी जीव को (जिसके क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है, क़त्ल करते हैं। और न वे व्यभिचार करते हैं जो

कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दोचार होगा।

(अल फुरकानः 63–68)

एक दूसरे अवसर पर कुर्आन कहता है सफल हो गये ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं, और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं, और जो ज़कात अदा करते हैं, और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौंडियों के पास जाएं कि इस पर वे निन्दनीय नहीं हैं। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं, और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, वही वारिस होने वाले हैं। जो फिरदौस की विरासत पाएंगे, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(अल मोमिनून 1–11)

ऊपरी आयतों से मालूम होता है कि रहमत, करूणा दया, क्षमा, सहानुभूति, मानव सम्मान इस्लाम की मौलिक और मुख्य विशेषताएं हैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल इन्सानों ही के साथ करूणा दया की शिक्षा नहीं दी बल्कि जानवरों और कीड़ों मकोड़ों के साथ भी करूणा दया और नर्मी व सहानुभूति की शिक्षा दी, हदीसों और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन चरित्र की किताबों में इसके उदाहरण बड़ी संख्या में मिलते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दया और नम्रता में समस्त मानवता के नायक थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद फ़रमाया है ''अद्दबनी रब्बी फअहसन तादीबी'' मेरा प्रशिक्षण, अल्लाह तआला ने किया और बहुत अच्छा किया है, हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे अच्छे अख़लाक़ और अच्छे कामों को पूरा करने के लिए भेजा है, जब हज़रत आइशा रज़ि0 से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यवहार के विषय में पूछा गया तो उन्होंने बताया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व्यवहार में कुर्आन का पूर्ण आदर्श थे, सहनशीलता और हृदय की विशालता में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जो स्थान था वहाँ तक बड़े–बड़े बुद्धिमानों की बुद्धि और कवियों के विचार और कल्पना की पहुँच नहीं हो सकती।

मानव जाति में उत्तम आचरण का सबसे बड़ा सूचक पैगम्बरों की जाति है और पैग़म्बरों में सर्वश्रेष्ठ हसती आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की है, इसी कारण अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस विशेषता से सम्मानित किया था ''तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असहनीय है वह तुम्हारी भलाई के लिए बहुत इच्छुक है, वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान हैं।''

(सूरः तौबा–128)

कुछ न्याय प्रिय योरोपियन लेखकों ने अपनी किताबों में स्वीकार किया है कि मुसलमानों का स्वभाव दानशील, साहसी और क्षमा करने वाला है वह सदैव दुर्बलों के साथ न्याय और सद्व्यवहार करते हैं, इस्लामी इतिहास में इसके बहुत से उदाहरण पाये जाते हैं।

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने आचरण और स्वभाव के आइने में

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

जब अल्लाह तआला किसी क़ौम की इस्लाह के लिए किसी को नबी की हैसियत से भेजता है तो क़ौम के ऐसे शख्स को चुनता है जो बुद्धि, विवेक, चरित्र, साहस व उत्साह के लिहाज़ से सब में विशेष होता है और ये विशेषता वास्तव में अल्लाह की ओर से प्रदान की जाती है ताकि वह सुधार के कामों को भलीभांति पूरा कर सके, इसके लिए उसको आसमानी आदेश दिये जाते हैं उन्हीं के अनुकूल वह अपनी क़ौम को सीधे और सच्चे रास्ते की ओर बुलाता है, अल्लाह की ओर से किसी को मनसबे नबूवत के मिलने से पहले उसकी पिछली ज़िन्दगी में उसके रब की ओर से ऐसी उत्तम विशेषताएं और गुण होते हैं जिनको उनकी क़ौम देखती और पसन्द करती है, क़ौम के बीच में रहने की वजह से क़ौम उसके उच्च स्वभाव और चरित्र से परिचित हो चुकी होती है।

लेकिन वही नबी, नबूवत मिलने के बाद जब क़ौम को सच्चाई की ओर आने की दावत देता है तो क़ौम के ज़िद्दी और स्वार्थी लोग केवल यह कह कर रद कर दिया करते हैं कि यह शख़्स अब ऐसी बातें करने लगा है जो हमारे बड़ों ने नहीं कीं, यह हमारे बड़ों के तरीक़े से हट गया है, लेकिन इसी के साथ साथ वह उसकी नेक और इन्सानी ख़ूबियों से इन्कार नहीं कर पाते, लिहाज़ा वह लोग अपनी मज़हबी आदतों और तरीक़ों को जिनको अपनी पैदाइश के वक़्त से इख़्तियार किये हुए होते हैं, सिर्फ़ पक्षपात और हट धर्मी में उन आदतों और तरीक़ों के ख़िलाफ़ कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं होते, इसी के साथ वह नबी की अख़लाक़ी और इन्सानी विशेषताओं से इन्कार भी नहीं करते, नबी उनसे कहता कि भाई तुम हमको अच्छी तरह जानते हो, कितने दिनों से तुम मुझको देख रहे हो। और मेरा तजुर्बा कर रहे हो, फिर भी मेरी बात की ओर ध्यान नहीं देते, उसी की ओर कुर्आन मजीद की यह आयत इशारा करती हैः— *''मैंने तुममें इससे पहले एक उम्र गुज़ारी है, तअज्जुब है तब भी तुम नहीं समझते''*

(सूरः यूनुस–6)

नेक नियती, शराफत, दृढ़ संकल्प और धैर्य, अच्छे व्यवहार, सहानुभूति, नैतिकता, नबी की वह विशेषताएं हैं जिनकी वजह से जो भी ज़रा निष्पक्ष हो कर उनकी बात सुनता तो मानने पर मज़बूर हो जाता।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही मामला था कि आप चालीस साल उनमें प्रिय और पसन्दीदा रहे थे, इसके बाद जब आप उनको ग़लत रिवाज और बिगड़े हुए मजहब से रोकने और अच्छे अख़लाक़ और सच्चे मज़हब की ओर दावत देने लगे तो वह सब उनसे नाराज़ हुए लेकिन इस बात से सख़्त मजहबी दुश्मनी रखने के बावजूद भी उनमें से कुछ न कुछ लोग उनकी बात पर ग़ौर करते और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत कुबूल करते, क्योंकि वह आप सल्ल0 की इन्सानी हमदर्दी, सच्चाई और पाक दामनी, अच्छे आचरण से भली भांति परिचित थे, लिहाज़ा जो शख़्स भी निष्पक्ष हो कर आप सल्ल0 की बात सुनता आप सल्ल0 का प्रेमी हो जाता, यहां

तक कि आप सल्ल0 को नुक़सान पहुँचाने की नियत से आने वाला भी आता, आप सल्ल0 के प्रभावशाली व्योहार को देखता तो उसमें अचानक तब्दीली आ जाती, फिर भी क़ौम की बड़ी संख्या आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होती थी, वह अपने कानों में रूई डाल लेते कि न सुनेंगे, और फिर आपको इस पैग़ाम से रोकने के लिए सख़्त रवय्या इख़्तियार करते और जुल्म करते।

आप सल्ल0 पर जब नबूवत की ज़िम्मेदारी पड़ी तो आप सल्ल0 ने उसके भार और वज़न को महसूस करते हुए फ़िक्रमन्दी का इज़हार अपनी पत्नी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि0 अन्हा से किया तो उन्होंने यह कह कर तसल्ली दी और इत्मीनान दिलाया कि *''आप परेशान न हों, ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला आपको कभी ज़लील व रुस्वा और अपमानित न करेगा, आप रिश्तेदारों और नातेदारों से अच्छा सुलूक करते हैं दूसरों का बोझ हल्का करते हैं, मुहताजों के काम आते हैं, मेहमान की मेहमानी और ख़ातिर मदारात करते हैं, राहे हक़ की तकलीफ़ों और मुसीबतों में मदद करते हैं''।*

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि0 ने यह बात सदबुद्धि, सत्य स्वभाव और अपनी ज़िन्दगी के तजुर्बो, लोगों से जानकारी की बुनियाद पर कही थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी नेक आदतों, सच्चाई और अमानतदारी के किरदार की बिना पर क़ौम की ओर से ''सादिक़ और अमीन'' की उपाधि मिली थी, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अति सच्चे और अति अमानतदार थे, आप सल्ल0 से दुश्मनी रखने के बावजूद आप सल्ल0 की दूसरी बातों का सब एतिबार भी करते थे, और आप सल्ल0 के पास अमानत रखते और रखवाते थे, आप सल्ल0 भी सहयोग और सहानुभूति के अवसर पर सब का ख़्याल रखते थे, यहाँ तक कि काबे के नव निर्माण के अवसर पर आप सल्ल0 ने भी सबके साथ मिल कर पत्थर उठाए और किसी अच्छे काम के लिए मश्वरा होता तो उसमें शरीक होते, किसी पर मुसीबत व परेशानी होती तो मदद करते। उसकी एक मिसाल यह है कि एक शख़्स जिससे अबू जहल ने ऊँट ख़रीदे थे, उसकी क़ीमत की अदायगी में टाल मटोल कर रहा था, आप सल्ल0 ने अबूजहल से क़ीमत दिलवाने में मदद की। ◆◇◆

प्यारे नबी की प्यारी.....

दाम दे कर कीमत न बढ़ाओ, अल्लाह के बन्दे! भाई–भाई हो जाओ। मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर जुल्म करे न उसको बेसहारा छोड़े और न घटिया और तुच्छ समझे। फिर आप अपने पवित्र सीने की ओर संकेत कर के फरमाने लगे कि तक़्वा (खुदा का डर) यहाँ है, (ऐसा तीन बार किया) आदमी के बुरा होने के लिए इतना ही काफी है कि वह अपने भाई को तुच्छ समझे, हर मुसलमान का खून, उसका सम्मान और उसका माल हराम और अवैध है।

(मुस्लिम)

मुसलमानों से अकारण बुरा गुमान रखना हराम हैः–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः बदगुमानी से बचो, बदगुमानी सब से झूठी बात है, किसी की बात कान लगा कर न सुनो, किसी के ऐब (दोष) की टोह में मत पड़ो, एक दूसरे से (गलत कामों) में बढ़ जाने की कोशिश न करो, और न एक दूसरे का बायकाट करो, अल्लाह के बन्दे! भाई–भाई हो जाओ। (मुस्लिम)

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

अधिकार व शक्तिः—

असीम शक्ति व अधिकार अल्लाह की सिफत (गुण) है, वो जो चाहे करे उसको सब अधिकार है, उसके आगे किसी को कोई अधिकार नहीं, जिस किसी को भी अधिकार है वो उसी का दिया हुआ है और वो सीमित है, अल्लाह ताला ने कुरआन मजीद में एलान फरमा दियाः— *''कान खोल कर सुन लो ! उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है इंतेजाम चलाना।''*

(सूरः अल-आराफ-54)

ऐसा नहीं है कि वो पैदा कर के खाली हो गया हो और उसने इंतेजाम दूसरों के सिपुर्द कर दिया हो, और न उसकी मिसाल बादशाहों की तरह है कि अपने कामों के लिए मंत्री रखते हैं और उनको अधिकार दे देते हैं, जैसा कि मक्के के मुशरिकों का मानना था विभिन्न देवी देवताओं के बारे में वो यही मान्यता रखते थे कि अल्लाह ने उनको पूरा अधिकार दे दिया है, कोई बारिश का मालिक है, कोई औलाद देने का, कोई रोज़ी का, इसीलिए वो इन देवी देवताओं को पुकारते थे मगर सबसे बड़ा अल्लाह को समझते थे फिर भी उनको मुशरिक ही बताया गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बना कर इसलिए भेजा गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको शिर्क की तारीकी से निकालें और ये यकीन पैदा करें कि सब कुछ अल्लाह के अधिकार में है, सूरः मोमिनून में मक्का के मुशरिकों के बारे में कहा जा रहा हैः— *''पूछिये हर चीज़ की बादशाहत किसके हाथ में है और वो पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता (बताओ) अगर तुम जानते हो, वो फौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में, आप कह दीजिये, तो कहाँ का जादू तुम पर चल जाता है।*

(सूरः अल-मोमिनूनः 88-89)

वो बुनियादी तौर पर मानते थे कि सब अल्लाह के अधिकार में है मगर ये भी अक़ीदा (विश्वास) रखते थे कि अल्लाह ने ये अधिकार दूसरों को भी दे दिया है, इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भेजे गए ताकि उनके इस मुशरिकों वाले अक़ीदे को दूर करें और ये बता दें कि सब कुछ अल्लाह की कुदरत और उसके इख्तियार में है, उसने किसी को ये अधिकार नहीं दिया कि वो जो चाहे करे, उसकी आखिरी मिसाल खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो सय्यिदुल अम्बिया (नबियों के सरदार) और आखिरी नबी हैं, अल्लाह के महबूब हैं मगर खुद उनको सम्बोधित कर के कहा जा रहा है— *''आप जिस को चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते, हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।*

(सूरः अल-कसस-56)

इससे बात साफ हो गई कि अल्लाह की बारगाह में किसी को कोई अधिकार व शक्ति नहीं, कुरआन मजीद ही में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहलवाया जा रहा हैः—

"कह दीजिए कि मैं तुम्हारे लिए ज़रा भी नुक़सान का मालिक नहीं हूँ और न जरा भी भलाई का, कह दीजिए कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न उसके सिवा मैं कहीं पनाह की जगह पाता हूँ।

(सूरः अल- जिन्न 21-22)

क़ायनात की सारी मख़्लूकात (सृष्टियों) में सब से ऊँचा मक़ाम सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म हो रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मत से साफ साफ कह दें कि मैं तुम्हारे नफा नुक़सान का मालिक नहीं, कहीं तुम धोखे में न पड़ जाना कि हम जो चाहें करें , हमारे नबी हम को बचा लेंगे, मैं खुद अपने नफा नुक़सान का मालिक नहीं सब अल्लाह ही का अधिकार है।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जब यह आयत उतरी कि *"अपने करीबी रिश्तेदारों को डराइये"* तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया, आम तकरीर भी की और खास तौर से भी अपने लोगों को मुखातब किया, फरमाया ऐ काब बिन लुवई के कबीले वालो! अपने आप को जहन्नम की आग से बचाने का उपाय करो, मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के यहां कुछ अधिकार नहीं रखता। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी तरह कबीला अब्दे शम्स को खिताब किया, फिर कबीला अब्दे मनाफ को खिताब किया, फिर बनू हाशिम को खिताब किया, फिर बनू अब्दुल मुत्तलिब को खिताब किया, यहां तक फरमायाः-

"ऐ फातिमा! अपने आप को जहन्नम की आग से बचाओ।"

(मुस्लिम 522)

और एक दूसरी जगह ये अलफाज भी मिलते हैंः-

"ऐ फातिमा अपने आप को जहन्नम की आग से बचाओ, मेरे माल में से जो हो मुझ से माँगो लेकिन मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के यहां कोई इख्तियार नहीं रखता।"

(सहीह बुखारीः 2753)

इस लम्बी हदीस से बात बिलकुल साफ हो जाती है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये फरमा रहे हैं जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह ने वो दिया जो किसी को नहीं दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपनी चहेती बेटी के बारे में ये फरमा रहे हैं तो फिर कोई दूसरा कैसे भरोसा कर के बैठ सकता है कि हम जो चाहें करें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को बख्शवा देंगे, यक़ीनी तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफाअत-ए-कुबरा (बड़ी सिफारिश) का हक हासिल होगा मगर उसकी हकीकत भी समझ लेनी चाहिए जिसको खुद अल्लाह ने कुरआन मजीद में बयान कर दिया कि ये सिफारिश अपने इख़्तियार से नहीं होगी बल्कि अल्लाह ताला इजाज़त देगा तो होगी, इरशाद हैः- *"कौन है जो बिना उसकी इजाज़त के उसके पास सिफारिश कर सके।*

(सूरः बकरह- 255)

❖❖❖

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाएं हम अपने व्यवहार में लाएं

मौलाना सय्यद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी रह0

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर अनगिनत उपकार किये हैं, उन उपकारों में बड़ा उपकार यह है कि अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेज कर भटकी दुन्या को अपना निर्धारित सत्यमार्ग दर्शाया, इस उपकार का वर्णन अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में इस प्रकार किया है–

अनुवादः– *''निःसंदेह अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा उपकार किया जब कि स्वयं उन्हीं में से एक ऐसा रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें निखारता है, और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है अन्यथा उससे पहले वे लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे''।*

(सूरः आले इमरान–164)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की ओर से जो सन्देश ले कर आए, वह हर उस शख्स के लिए नजात (मुक्ति) और सफलता देने वाला है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चा प्रेम अपने मन में बसा लिया, और उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी को अपने लिए शुभ तथा सफलता का साधन समझा और फिर आपके बताये हुए मार्ग पर चलते हुए जीवन बिता दिया।

हमारे लिए आवश्यक है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी तथा आप की शिक्षाओं का अध्ययन करते रहें, और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नत पर स्वयं चलें और अपने घर वालों तथा सम्बन्धियों को आदेश दें कि वह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण में अपना जीवन बिताएं, इससे सांसारिक तथा पारलौकिक (आख़िरत) की सफलता हमें प्राप्त होगी। अल्लाह तआला हम को पुरस्कृत करेगा।

आज संसार में दूसरों की ओर से मुसलमानों के विरोध में जो कुछ देखा जा रहा है और मुसलमानों को गिराने के लिए जो शडयंत्र रचे जा रहे हैं वह स्पष्ट हैं इन विरोधियों तथा शड़यंत्रों से बचने का एक ही मार्ग है कि हम इस्लाम के सच्चे अनुयायी बनें और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन प्रणाली को हर समय अपने समक्ष रखें। तामस मन और शैतान से अल्लाह की शरण चाहते हुए नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं को अपनाए रखें, पवित्र कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से शिक्षाएं प्राप्त करके उन को अपने दांतों से पकड़े रखें।

यही नहीं कि स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं को अपनाएं अपितु अपने सभी मुसलमान भाइयों को भी इस ओर लाने का भरसक प्रयास करें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवनी की एक एक बात लोगों के सामने

शेष पृष्ठ..30...पर

ऐ नामे मुहम्मद सल्ले अला

माहिरुल क़ादिरी

कुछ कुफ़्र ने फ़ितने फैलाए, कुछ ज़ुल्म ने शोले भड़काए
सीनों में अदावत जाग उठी इन्सान से इन्साँ टकराए
पामाल किया बरबाद किया कमज़ोर को ताक़त वालों ने
जब ज़ुल्म सितम हद से गुज़रे तशरीफ़ मुहम्मद ले आए
रहमत की घटाएं लहराईं दुनिया की उम्मीदें बर आईं
इकराम व अता की बारिश की, अख़लाक़ के मोती बरसाए
तहज़ीब की शमएं रौशन कीं ऊँटों के चराने वालों ने
काँटों को गुलों की किसमत दी, ज़र्रों के मुक़द्दर चमकाए
अल्लाह से रिश्ते को जोड़ा, बातिल के तिलिस्मों को तोड़ा
ख़ुद वक़्त के धारे को मोड़ा, तूफ़ाँ में सफ़ीने तैराए
तलवार भी दी कुरआँ भी दिया, दुनिया भी अता की उक़बा भी
मरने को शहादत फ़रमाया, जीने के तरीक़े समझाए
मक्के की ज़मीं और अर्श कहाँ, दम भर में यहाँ पल भर में वहाँ
पत्थर को अता की गोयाई और चाँद के टुकड़े फ़रमाए
मज़लूमों की फ़रयाद सुनी, मजबूरों की ग़म ख़्वारी की
ज़ख़्मों पे ख़ुनुक मरहम रखे, बेचैन दिलों के काम आए
औरत को हया की चादर दी, ग़ैरत का ग़ाज़ा भी बख़शा
शीशों में नज़ाकत पैदा की, किरदार के जौहर चमकाए
तौहीद का धारा रुक न सका, इस्लाम का परचम झुक न सका
कुफ़्फ़ार बहुत कुछ झुंझलाए, शैताँ ने हज़ारों बल खाए
ऐ नाम मुहम्मद सल्ले अ़ला, माहिर के लिए तो सब कुछ है
होंटों पे तबस्सुम भी आया, आँखों में भी आँसू भर आए

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दुस्तान से अरब निबन्धकारों, इतिहासकारों और सैलानियों की मुहब्बतः—

मुहम्मद बिन क़ासिम की तरह अरब निबन्धकारों, इतिहासकारों, भूगोलविदों और सैलानियों का दिल हिन्दुस्तान की ओर से नरमी, मुहब्बत और हमदर्दी से भरा रहा, क्योंकि उन्होंने अपनी किताबों में हिन्दुसतान की विशेषताएं और यहां के वासियों की विशेष योग्यताओं का उल्लेख तो बहुत ही अच्छे ढंग से किया है, उनकों इस देश की जो चीज़ पसन्द आ जाती, उसकी दिल खोल कर प्रशंसा करते। उदाहरण के लिए अरबी भाषा का प्रसिद्ध साहित्यकार जाहिज़ लिखता है कि हिन्दुस्तान चिन्तन और दर्शन का स्रोत है। सुलेमान ताजिर लिखता है कि हिन्दुस्तान वाले घिनावने खेल तमाशे को बुरा समझते हैं और वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं करते। याकूबी ने लिखा है कि हिन्दुस्तान के लोग बुद्धिमान और दार्शनिक हैं। हर तरह के दर्शन में सब लोगों से ऊपर और बढ़ कर हैं। ज्योतिष और नक्षत्र विद्या में उनके कथन सबसे अधिक सही और सटीक होते हैं। अहमद बिन उमर बिन रस्ता तो हिन्दुस्तान के गेहुँआं रंग और यहाँ के आकर्षक सौन्दर्य का क़ैदी रहा। वह तो अपने ज़माने के हिन्दू राजा के न्याय को भी बहुत अधिक स्वीकार करता था। लिखता है कि व्यापारियों के साथ राजा का बहुत ही अच्छा व्यवहार रहता। उसने हिन्दू धर्म का भी अध्ययन किया और सुल्तान की एक मूर्ति का बहुत अच्छा चित्र खींचा है और उसकी पूजा को बहुत अच्छे ढंग से चित्रित किया है। यह लिखता है कि लोग इन मूर्तियों के सामने जाते हैं तो घुटनों के बल बैठ कर और हाथ जोड़ कर कहते हैं कि हमारी ओर कृपा दृष्टि हो, हम पर दया कीजिए। रोते हैं और अत्यनत विनम्रता से दुआ करते हैं। मसऊदी लिखता है कि हज़रत आदम अलै0 अपना तन छिपाने के लिए जन्नत से पत्तियाँ लाये और जब वह सूख गईं तो हवाओं ने उनको उड़ा कर पूरे हिन्दुस्तान में फैला दिया। इसीलिए हिन्दुस्तान में सुगन्ध और इत्र जैसे ऊद, लौंग और मुश्क आदि अधिक पायी जाती हैं। मुकद्दसी ने तो हिन्दुस्तान के बहुत से धार्मिक सम्प्रदायों जैसे बहाभोजिया, दामानिया, दवानिया, रिश्तिया, मसग़दा, महाकलिया, जलंकनिया आदि के विश्वासों और रीतियों का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया है। वह कुछ ब्राह्मणों को एकेश्वरवादी घोषित करता है। बहाभोजिया के बारे में लिखता है उसके अवतार बहाभोज़ ने अल्लाह की इबादत के लिए उसकी मूर्ति ला कर उसकी पूजा करने की शिक्षा दी है ताकि यह मूर्ति अल्लाह के दरबार में उनके लिए माध्यम बन सके। दामानिया और दवानिया के बारे में लिखता है कि यह लोग तौहीद अर्थात एकेश्वरवाद की तरह रिसालत अर्थात पैग़म्बरी को भी मानते

हैं। रिश्तिया के उल्लेख में कहता है कि यह लोग लम्बे समय तक ध्यान लगा कर अपनी इन्द्रियों को बेकार कर देते हैं ताकि वह सांसारिक प्रदूषणों से अलग रहें और उन पर फ़रिश्तों के प्रकाश और तजल्ली की वर्षा हो (वही)। इस्तखरी को भी मुल्तान की मूर्तियों से बहुत दिलचस्पी रही। उनके बारे में अपनी किताब अल–मसालिक वल ममालिक में बहुत लाभदायक जानकारी उपलब्ध की है।

अरबों के अच्छे प्रभावः–

दक्षिण भारत में अरब हज़रत मुहम्मद सल्ल0की मृत्यु के बाद ही आने लगे और उन्होंने दक्षिण भारत के तटों, विशेष रूप से मालाबार में अपने चरित्र की बुलंदी और मेल–जोल की उदारता से उनके क्षेत्र के लोगों पर अपने इतने अच्छे प्रभाव डाले कि हिन्दू राजाओं की नज़र में भी बहुत सम्मान, आदर और हैसियत प्राप्त कर ली थी और यही कारण था कि जब वह अपने धर्म का प्रचार करते तो उनकी प्रचार–प्रसार की गतिविधियों में कोई रुकावट नहीं डाली जाती थी। अलाउद्दीन खिलज़ी की फ़ौज पहुँचने से पहले तमिल और दक्षिणी तट के क्षेत्रों में मुसलमानों की बड़ी आबादी हो गयी थी, उनकी व्यापारिक मण्डियाँ स्थापित थीं। उनका मेल जोल वहां के वासियों से बढ़ता जा रहा था। अतः हिन्दुओं और अरबों से मिल कर कई संकर नस्लें जैसे रावतन और लबी पैदा हुईं। 10वीं सदी में अरब पूर्वी तट पर पहुँचे। पहुँचने के बाद ही अपनी न्यापप्रियता और व्यवहार से पूरे तट पर छा गये। छोटी सी अवधि में राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण हैसियत प्राप्त कर ली। एक तरफ़ मंत्रियों अमीरुल बहर (समुद्र के अधिकारी) दूत के पदों पर नियुक्त हुए दूसरी तरफ़ वहां के लोगों को इस्लाम भी कबूल कराते रहे। अपने धर्म का प्रचार किया, मस्जिदें बनवायीं, मकबरों का निर्माण किया। जो उनके प्रचारक और सूफ़ियों के लिए प्रचार–प्रसार के केन्द्र बन गये और डॉ0 ताराचन्द के कथनानुसार 7वीं शताब्दी के बाद से दक्षिण भारत में हिन्दू मत में जो कुछ भी क्रान्तियाँ आयीं हैं तो यह इस्लाम ही के प्रभाव के परिणाम हैं। काठियावां, गुज़रात और कोकण में मुसलमानों की अच्छी ख़ासी आबादी थी। हर जगह उनकी एक–एक मस्जिद थी। हिन्दू राजा इन मुसलामनों के साथ उदारता और अच्छे व्यवहार के साथ मिलते। सुलेमान, मसऊदी, इब्ने हौकल और अबू ज़ैद गुज़रात के वल्लभी राजा बलहरा की मुस्लिम दोस्ती की प्रशंसा करते थे। सुलेमान लिखता है कि गुज़रात के राजाओं की उम्रें लम्बी होती हैं। कुछ राजा पचास वर्ष तक राज करते हैं। उसके देश वाले समझते हैं कि उनके बादशाह के शासन का और उनकी उम्रों के लम्बी होने का कारण अरबों से मुहब्बत है। कोई राजा और उसकी प्रजा बलहरा और उसकी प्रजा से अधिक अरबों से मुहब्बत नहीं करती। मसऊदी 916 हि0 में हिन्दुस्तान आया तो वह लिखता है कि सिन्ध और हिन्दुस्तान के राजाओं में राजा बलहरा की तरह मुसलमानों को और किसी शासन में सम्मान प्राप्त नहीं है। इस्लाम इस राजा

की सल्तनत में सुरक्षित और सम्मानित है। उसके देश में लमानों की 5 वक्त की नमाज़ की मस्जिदें और जामा मस्जिदें हैं जो आबाद हैं। यहाँ के राजा 40–40 और 50–50 वर्ष बल्कि इससे भी अधिक समय तक राज करते हैं। इस राज्य वासियों का विचार है कि इनकी उम्रें न्याय और मुसलमानों का आदर सम्मान करने के कारण लम्बी होती हैं। इस राजा के यहाँ सेनाओं को राजकोष से मुसलमान के बैतुलमाल की तरह वेतन मिलता है।

मसऊदी आगे चलकर लिखता है ''मैं 304 हि0 में हिन्दुस्तान के शहर चैमूर में जो राजा बल्लभराय के राज्य लार का क्षेत्र है, मौजूद था। उसमें जो राजा था उसका नाम जाँच था। उस समय लगभग 10,000 मुसलमान वहां आबाद थे जो वास्तव में बयासिरा, सैराफ़ अम्मान, बगदाद और दूसरे देशों के थे। लेकिन उन क्षेत्रों में अपना आवास बना लिया है। उनमें से बहुत से सम्मानित और बड़े व्यापारी हैं, जैसे मूसा बिन इस्हाक़, सन्दाबोरी और हुनरमंदी अर्थात न्यायाधीश के पद पर उन दिनों अबू सईद मारूफ़ बिन ज़करिया नियुक्त थे। हुनरमंद से तात्पर्य मुसलमानों का सरदार है। इसका नियम यह था कि राजा का क़ानून था कि वह किसी मुसलमान सरदार ही को उनका सरदार बनाता था और मुसलमानों के सभी मामले उनके सुपुर्द होते थे। बयासिरा से तात्पर्य वह मुसलमान हैं जो हिन्दुस्तान में पैदा हुए, इस नाम से वह प्रसिद्ध हैं। इसका एक वचन बैसर है। हमारे सम्मानित उस्ताद अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी का विचार है कि बैसर संभवतः गुज़राती शब्द है जिसका मूल बेसिरा है, जिसका अर्थ दो सिरों वाला है अर्थात वह व्यक्ति जो अरबी में हिन्दुस्तानी की संकर नस्ल से पैदा हुआ।

इस्तखरी (251 हि0) लिखता है कि खंभात से राजा बिलहरा के शहर चैमूर तक सब हिन्दुओं के शहर हैं लेकिन उनमें कुछ मुसलमानों की भी आबादी है और राजा मलहरा की ओर से कोई मुसलमान ही उनके मामलों का निरीक्षक होता है। इन शहरों में मस्जिदें और जामा मस्जिदें भी हैं। इदरीसी 11वीं सदी में लिखता है कि नहरवाड़ा में बड़ी संख्या में मुसलमान व्यापारी आते रहते हैं, सरकार की ओर से यात्रियों का बहुत सम्मान होता है। उनकी धन सम्पत्ति की रक्षा की जाती है। और यह जान कर संभवतः आश्चर्य होगा कि सोमनाथ के राजा के यहां मुसलमान पदाधिकारी भी थे। दक्षिण भारत में जो क़ौम मोपिला के नाम से प्रसिद्ध है वह वास्तव में ईराक से इस क्षेत्र में आए और यहाँ बस गये। वह गर्म मसाले, हाथी दाँत और जवाहरात के व्यापारी बन कर आये। उनमें और हिन्दू राजाओं में दोस्ती पैदा हो गयी थी। हिन्दू राजा अपने क्षेत्र में व्यापार का बाज़ार गर्म रखते और विकास बढ़ाने के विचार से इन मुसलमान व्यापारियों को अपनी सुरक्षा और संरक्षण में ले लिया और उनकी वजह से उस क्षेत्र में व्यापार का विकास हुआ, खुशहाली भी पैदा हुई, इसलिए जब उन्होंने इस्लाम की ओर पुकारने के लिए अपनी गतिविधियाँ प्रदर्शित कीं तो उनका विरोध नहीं किया गया।

.....जारी.....

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बारे में
भारतीय दार्शनिकों एवं महान व्यक्तियों के विचार

इं0 जावेद इक़बाल

दुनिया के प्रत्येक देश, क्षेत्र और ज़माने में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन पर महान पुरुषों, दार्शनिकों, और राजनैतिज्ञों ने शोद्ध कार्य किये हैं, बड़ी गहराई से आप की दिनचर्या का अध्ययन किया है। ''डॉ0 माईकिल हार्ट'' ने अपनी पुस्तक *"The Hundred"* में दुनिया को अत्यधिक प्रभावित करने वाले 100 व्यक्तियों की सूची में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का नाम सबसे पहले, एक नम्बर पर रखा है। और लिखा है कि मुहम्मद सल्ल0 दुनिया का एक मात्र व्यक्ति है जो धार्मिक और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से सफल हुआ।

आज हम केवल अपने देश भारत के कुछ मुख्य हस्तियों के द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के विषय में प्रकट किये हुए विचारों का उल्लेख करेंगे।

स्वामी विवेकानन्दः– स्वामी विवेकानन्द के विचार विवेकानन्द साहित्य सप्तम खण्ड पृ0 192 पर इस प्रकार दर्ज हैं– ''पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 दुनिया में समता और बराबरी के सन्देशवाहक थे, वे मानव जाति में मुसलमानों के भ्रतृ–भाव के प्रचारक थे उनके धर्म में जाति, सम्प्रदाय, वर्ण लिंग आदि पर आधारित भेदों के लिए कोई स्थान न था।''

गाँधी जीः–

गाँधी जी ने बार–बार अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हुए हरिजन अखबार में लिखा था– ''यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि मुहम्मद सल्ल0 को पैग़म्बरी तलवार से नहीं मिली, वह सत्य की खोज में कठोर साधनायें करके अपने अल्लाह से दुआयें मांग–मांग कर प्राप्त हुई। मैं निश्चय पूर्वक इस्लाम को एक इलहामी (ईश्वर प्रेरित) मज़हब मानता हूँ और इसीलिए कुरआन मजीद को इलहामी किताब और मुहम्मद सल्ल0 को महान पैग़म्बरों में से एक पैग़म्बर मानता हूँ।

(गाँधी जी और हिन्दू मुस्लिम एकता पृ0 28 लेखक डॉ0 विशम्बर नाथ पाण्डे भूतपूर्व गवर्नर, उड़ीसा)

प्रोफेसर सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदीः–

भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय के निर्देश पर पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय एम0ए0 (संस्कृत वेद) ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के विषय में महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। वह जिस नतीजे पर पहुँचे उन्हीं के शब्दों में ''बल्कि और मुहम्मद साहब के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे (वैदिक ग्रंथों में) मिला उसे देख कर आश्चर्य होता है कि जिस कल्कि की प्रतीक्षा में हम भारतीय बैठे हैं वह हो (कर चले भी) गये और वह मुहम्मद साहब हैं।''

(कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ0 57 लेखक डॉ0 वेद प्रकाश उपाध्याय प्रकाशक सरस्वती वेदान्त प्रकाश संघ, प्रयाग)

श्रीमति सरोजनी नायडूः–

श्रीमति सरोजनी नायडू (भारत कोकिला) लिखती हैं– हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का लाया हुआ यह पहला धर्म है जिसने लोकतंत्र की शिक्षा दी और उसे व्यावहारिक रूप दिया जब मीनारों से अज़ान दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं तब इस्लाम का लोकतंत्र साकार हो उठता है। राजा और रंक एक

पंक्ति में साथ साथ झुक जाते हैं और ऐलान करते हैं ''केवल अल्लाह ही महान है'' इस्लाम की इस अटूट एकता को देख कर, जो इन्सान को भाई भाई के रिश्ते में गूँधती है, मैं आश्यर्च चकित हो उठती हूँ।

(विश्वएकता 9:1997 पृ0 146)

इन्साइक्लोपीडिया बिरटानिका में दर्ज है:–

समस्त पैग़म्बरों और धार्मिक क्षेत्र के महान व्यक्तियों में मुहम्मद साहब सबसे ज़्यादा सफल हैं। यह सफलता उनको संयोगवश नहीं मिली और न ही सरलता पूर्वक यकायक उन्हें मिली बल्कि यह उस वास्तविकता का फल थी जो उनके समकालीन लोगों ने उनको साहसी और निष्कपट पाया। यह उनके प्रशंसनीय और अत्यंत प्रभावशाली व्यतित्व का फल था।

बैंगलोर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ0 के0एस0 रामाकृष्णा राव अपने एक लेख में लिखते हैं– मुहम्मद के व्यक्तित्व की सभी यथार्ताओं को जान लेना बड़ा कठिन कार्य है। मैं तो उसकी बस कुछ झलकियाँ ही पा सका हूँ उनके व्यक्तित्व के कैसे कैसे मनभावन दृश्य निरन्तर नाटकीय प्रभाव के साथ सामने आते हैं। मुहम्मद के अनेकों रूप हैं, उनके विभिन्न रूप– मुहम्मद पैग़म्बर, मुहम्मद जनरल, मुहम्मद शासक, मुहम्मद योद्धा, मुहम्मद व्यापारी, मुहम्मद उपदेशक, मुहम्मद दार्शनिक, मुहम्मद राजनीतिज्ञ, मुहम्मद वक्ता, मुहम्मद समाज सुधारक, मुहम्मद यतीमों के पोषक, गुलामों के रक्षक, महिला वर्ग का उद्धार करने और उनको बंधनों से मुक्त कराने वाले, मुहम्मद न्याय करने वाले, मुहम्मद सन्त और इन सभी क्षेत्रों में समान रूप से एक औजस्वी वीर नायक हैं।

(विश्व एकता सन्देश, स्वर्ण जयन्ती विशेषांक पृ0 150)

हिन्दुस्तान टाइम्स के भूतपूर्व सम्पादक श्री बी0एन0 साहनी मासिक पत्रिका ''पेशवा'' 1931 में लिखते हैं–

''इस सच्चाई से किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि इस्लाम के प्रचारक का व्यक्तित्व जितना पवित्र और उत्तम था, उतनी ही आकर्षण शक्ति मौजूद थी और आप ऐसे दिल और दिमाग़ के मालिक थे जिसका उदाहरण आज तक इस दुनिया में बहुत कम पाया जाता है। इस्लाम में सबसे अधिक वर्णनीय वे अधिकार हैं जो उसने महिलाओं को दिये हैं .....विरासत (जायदाद और सम्पत्ति में संवैधानिक अधिकार) खुला (पत्नी की मांग पर पति से सम्बन्ध विच्छेद) के बारे में इस्लाम के पैग़म्बर ने महिलाओं को जो अधिकार प्रदान किये हैं, वे वर्तमान काल में हर देश के बुद्धिजीवी अपनी महिलाओं को देने के इच्छुक है।

''जब आकर्षण शक्ति का वर्णन किया जाता है तब अरब की एक महिला उम्मे माबद के द्वारा रसूलुल्लाह सल्ल0 का चित्रण (हुलिया) प्रस्तुत करना उचित होगा। घटना कुछ इस तरह है:–

उम्मे माबद के द्वारा मुहम्मद सल्ल0 की चर्चा:–

यह उस मसय की घटना है जब मक्का नगर में अधर्मी विरोधियों ने आप सल्ल0 की हत्या की योजना बनाई थी और आप सल्ल0 खुदा की अनुमति पा कर अपने वतन मक्का से हिजरत करके मदीना की ओर जा रहे थे। हज़रत अबू बकर और एक रास्ता बताने वाला व्यक्ति साथ थे, वह मुसलमान नहीं हुआ था, वेतन पर साथ आया था। रास्ते में ''उम्मे माबद'' नाम की एक महिला की झोपड़ी मिली। यह खुज़ाइया क़ौम की एक महिला थीं और मुसाफ़िरों की आवभगत में मशहूर थीं। यहाँ पहुँच कर उस महिला से पूछा कुछ खाने को है? उसने कहा यदि होता तो पूछने से पहले ही मैं स्वयं देती।

शेष पृष्ठ...34...पर

सलाम

—डॉ0 नवाज़ देवबन्दी

अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
शाहे ज़ीशान को, शाने कुर्आन को
रूहे ईमान को, रब के मेहमान को
हक़ के दिलदार को, शाहे अबरार को
मेरे सरकार को, सबके ग़मख़्वार को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
उनके अतवार को, आला किरदार को
नर्म गुफ़्तार को, तेज़ रफ़्तार को
सब्ज़ दस्तार को, उनके रुख़सार को
हुस्ने मेअ़यार को, जुल्फे ख़मदार को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
आमिना माई को, आप की दाई को
बूढ़ी हमसाई को, हर शनासाई को
माँ की ममताओं को, जन्नती पाँव को
प्यार की छाँव को, उम्मती माओं को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
इश्क़ के फ़ख्र को, इल्म के क़स्र को
पैकरे सब्र को, बिन्ते बू बक्र को
नाज़ बर्दार को, उनके ग़मख़्वार को
चार के चार को यानी हर यार को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
उनके दिलदार को, आशिक़े ज़ार को
ज़ानु—ए—यार को, यार को ग़ार को
होश की आब को, ज़ोश की ताब को
अद्ल के बाब को, इब्ने खत्ताब को

अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
माल को जान को, दस्ते फैज़ान को
इब्ने अफ्फान को, हज़रत उस्मान को
तेज़ तलवार को, फत्हे बलदार को
अज़्मे कर्रार को, उनके घर बार को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
उनके जाँ बाज को, एक दमसाज़ को
हब्शी अंदाज़ को, उनकी आवाज़ को
एक सुखनदान को, एक सना ख्वान को
नात की शान को, यानी हस्सान को
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम अस्सलाम

❖❖❖

सीरते रसूल सल्ल0 का अध्ययन
हर मुसलमान के लिए अति आवश्यक है

सीरते रसूल सल्ल0 के अध्ययन के मौलिक फ़ाइदे निम्नलिखित हैंः–
इससे ईमान में इज़ाफ़ा और मज़बूती पैदा होती है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है जो हर मुसलमान मर्द और औरत के लिए ज़िन्दगी का सरमाया है, जिसके छत्रछाया में मुसलमान अपनी ज़िन्दगी का सफ़र तै करता है और इसी से उसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत और सुन्नते नबवी की पैरवी की नेमत नसीब होती है जो दुनिया व आख़िरत दोनों में हर मुसलमान की कामयाबी की ज़मानत है।
''सच्चा राही'' के पाठकों एवं समस्त भाईयों के अध्ययन के लिए निम्नलिखित किताबों का मश्वरा हैः–
1– ''हमारे हुज़ूर'' लेखक अमतुल्लाह तसनीम। 2– ''रहमते आलम'' अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी। 3– ''नबी–ए–रहमत'' मौलाना अली मियाँ नदवी। 4– ''रहबरे इन्सानियत'' मौलाना मु0 राबे हसनी नदवी। 5– ''ख़ुतबाते मद्रास'' अल्लामा सै0 मुलेमान नदवी। 6– ''रहमतुल्लिलआलमीन'' क़ाजी सुलेमान मनसूरपुरी। ◆◆

संवैधानिक मूल्य और इस्लाम धर्म

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

भारत का संविधान चार आदर्शों– (1) न्याय (2) समता (3) स्वतंत्रता (4) बन्धुता पर आधारित है और इन्हीं आदर्शों पर समस्त संविधान को केंद्रित किया गया है, अतः लेखक ने इन चार आदर्शों को इस्लाम धर्म से जोड़ने की कोशिश की है,जो आगे पढ़ा जा सकता है।

न्यायः–

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि इस्लाम एक प्राकृतिक धर्म और जीवन दर्शन है और वह एक शांतिपूर्ण और स्थायित्व पूर्ण समाज की स्थापना चाहता है और ऐसे लोगों को चिन्हित करके उनकी घेराबंदी करता है जो अमन व शांति के लिये खतरा हैं और ऐसी एक्टिविटीज और सरगर्मियों को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करता है जो समाज के लिये अमन और स्थायित्व के लिये बड़े सहायक हों,इन सब बातों में सबसे महत्वपूर्ण न्याय व इंसाफ है।

इस्लाम समाज के लिये सुधारक का रोल अदा करता है और सामाजिक बुराइयों के ताने–बाने को धवस्त करता है। सच्चाई है कि जुल्म व अत्याचार से समाज बर्बाद होता है और न्याय व इंसाफ से समाज की बुनियादें मजबूत होती हैं, पवित्र कुरआन में हैः–

"अल्लाह तुमको आदेश देता है कि अमानत वालों की अमानतें उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों में निर्णय करने लगो तो न्याय के साथ निर्णय करो,अल्लाह तुम्हें बहुत अच्छी नसीहत करता है, निस्संदेह अल्लाह सुनता–देखता है"।

(सूरह अन्निसाः 58)

ऊर्दू में अदल (जिससे अदालत बना है) का अर्थ है हकदार को हक देना,बराबर बांटना, सीधा करना और उर्दू में इंसाफ का अर्थ भी निस्फ अर्थात बराबर बांटना है। परिभाषा के अंतर्गत देखेंगे तो अदल व इंसाफ एक ही अर्थ में प्रयोग होते हैं।

इस्लाम अपने अनुयायियों को जीवन के सभी क्षेत्रों की रहनुमाई प्रदान करता है। इस्लाम के अस्तित्व का बुनियादी मकसद समाज में इंसाफ व न्याय की स्थापना और अन्याय का खात्मा है।उसके लिये कुरआन और हदीस (मुहम्मद साहब का जीवन दर्शन) में स्पष्ट और दो टूक आदेश मौजूद हैं, जबतक समाज में कानून का राज और न्याय व इंसाफ की स्वतन्त्र व्यवस्था स्थापित नहीं होगी उस समय तक समाज तरक्की और खुशहाली की राह पर नहीं चल सकता। अन्याय,घूस,फरेब और अत्याचार आदि से समाज में बेचौनी और अविश्वास का वातावरण बनता है, कानून पर विश्वास समाप्त हो जाता है और सामाजिक ताना–बाना तहस–नहस हो जाता है,पवित्र कुरआन में एक जगह हैः–

"बेशक अल्लाह न्याय और भलाई अपनाने का आदेश देता"।

(सूरह अन्नहलः 90)

पवित्र कुरआन के दूसरे स्थान पर हैः– *"(ऐ नबी सल्ल0! बता दीजिये कि) मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे साथ न्याय करूँ"।*

(सूरः शूरा–15)

इस्लाम में न्याय को बुनियादी हैसियत हासिल है, कानून सबके लिये बराबर और समाज के आखिरी पायदान पर खड़े आदमी से ले कर देश–राज्य के शासक तक सब पर एक समान लागू होता है, इसमें किसी प्रकार का भेदभाव और वरीयता की गुंजाइश नहीं है।

इस्लाम में किसी के लिये कोई भेदभाव नहीं, सभी के हक–हुकूक बिना भेदभाव, रंग, वंश, वर्ण, भाषा, वतन के बराबर हैं, किसी भी व्यक्ति, समूह, वर्ग, वर्ण, वंश, भाषा और देश के आधार पर किसी को किसी पर कोई वरीयता नहीं है।

इस्लाम में इंसाफ का दायरा केवल अदालतों तक सीमित नहीं बल्कि जिंदगी के हर मामले में उसको जरूरी करार दिया गया है।विश्व का प्रबंधन न्याय व इंसाफ पर आधारित है, क्रय–विक्रय, लेन–देन और नाप–तौल में अन्याय नहीं होना चाहिए,इसलिए न्याय को कई पहलुओं में बांटा गया है,उनमें से कुछ का वर्णन किया जाता है।

क्रय–विक्रय में न्याय–

यदि कोई कारोबार करता हो तो उसके लिये आदेश है कि नाप–तौल में न्याय करे और चीजों को बेचते समय यदि उसमें कुछ डैमेज और इफेक्ट हो तो उसको छुपाने की कोशिश न करे बल्कि खरीदार को साफ–साफ बता दे, पवित्र कुरआन में हैः–

''इंसाफ़ के साथ पूरा–पूरा नाप–तौल किया करो''।

(सूरह अनआमः 152)

न्यायिक मामलों में इंसाफः–

ये विषय सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील है, क्योंकि अदालतों में लोग विशेष रूप से न्याय की उम्मीद ले कर जाते हैं, यदि उन्हें न्याय नहीं मिलता तो वह निराश होते हैं और वह अवसाद के शिकार हो कर स्वयं का या समाज का नुकसान कर सकते हैं। अदालती लिखा–पढ़ी के बारे में पवित्र कुरआन में हैः– *"तुम्हारे मध्य (समझौता) लिखने वाला इंसाफ के साथ लिखे"।*

(सूरः अल बकरह–282)

इसी प्रकार न्यायिक प्रक्रिया में गवाही का बड़ा महत्व है, एक जगह अल्लाह के कथन का आशय ये है कि "जो तुमने देखा है उसे मत छुपाओ"। पवित्र कुरआन में हैः– *''जब तुम्हें गवाही के लिये बुलाया जाय तो इनकार मत करो"।*

(सूरः बकरह–282)

आगे गवाही के ही संदर्भ में है कि जब गवाही दो तो हर प्रकार की संकीर्णता से दूर हो कर दो, चाहे वह गवाही अपने घर वालों, दोस्तों और रिश्तेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। पवित्र कुरआन में हैः– *"जब तुम कहो तो न्याय को अपनाओ चाहे वादी मुकद्दमा से रिश्तेदारी ही क्यों न हो"।*

(सूरः अनआम–152)

समताः–

अब इस्लामिक समता पर चर्चा करते हैं। इस्लाम के फॉलोवर्स का दावा है कि समानता की बुनियाद इस्लाम ने ही डाली, क्योंकि हज़रत मुहम्मद साहब के अवतरण से पहले दुनिया जात–बिरादरी, ऊँच–नीच में उलझी हुई थी, भारत में मनुस्मृति के कारण ये बीमारी पराकाष्ठा को जा पहुंची थी, सातवीं शताब्दी के आरंभ में जब इस्लाम भारत पहुंचा तो जात–पात से पीड़ित बड़े वर्ग ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया,ये अलग बात है कि बाद में मनुस्मृति से प्रभावित हो कर भारत के मुसलमानों में भी जात–पात की बीमारी घुस गई मगर सामान्यतः ये केवल शादी–ब्याह तक ही सीमित रही और वर्तमान में विशेष रूप से

बड़े शहरों में तो ये बीमारी समाप्त होने के कगार पर है।

हज़रत मुहम्मद साहब से पूर्व लगभग सभी सभ्यता और धर्मों में मानव–मानव में अंतर करने और कुछ लोगों के जन्मजात प्रतिष्ठित होने और कुछ लोगों को तुच्छ समझने की बीमारी सामान्य रूप से पाई जाती थी। यहूदी इस्राइली और गैर इस्राइली में अंतर करते थे, जो हजरत याकूब के घराने से हैं वही प्रतिष्ठित हैं, ये बीमारी उनमें आज भी पाई जाती है। प्राचीन फारस (ईरान) के लोगों का मानना था कि जो बादशाह की नस्ल का है वह ईश्वर का खास बन्दा है बल्कि खुदा के घराने से है। भारत में मनुस्मृति द्वारा मानव के लिये 4 वर्ण बनाये गए थे, सबसे उच्च ब्राह्मण, दूसरे क्षत्रिय, तीसरे वैश्य और चौथे शूद्र माने गए। ये क्रमवार स्थिति थी और शूद्र सबसे दरिद्र माने गए, उनके लिये शिक्षा और मंदिर के दरवाजे बंद थे, उनके लिये कुंवे का पानी बन्द था, वह उच्च जाति कहे जाने वालों के गुलाम थे और उनके ऊपर ऐसे अत्याचार किये गये थे कि मानव इतिहास में शायद उनसे अधिक कोई पीड़ित न था, और आज तक इस सोच से बहुत से लोग नजात नहीं पा सके हैं।

इसी तरह अरब में भी कबायली संस्कृति में अपने को सर्वश्रेष्ठ मानने की परंपरा थी और श्रेष्ठता के नाम पर बरसों लड़ाइयों में उनकी जिंदगी तबाह होती थी। ऐसे में इस्लाम के अंतिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद साहब का उदय होता है और वह मानव एकता का संदेश सुनाते हैं और जन्मजात सर्वश्रेष्ठ और उच्च होने की परिकल्पना को रद्द करते हैं और साफ शब्दों में कहते हैं कि किसी अरबी को अजमी (गैर अरबी) पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर रंग व नस्ल के कारण कोई वरीयता नहीं है बल्कि वरीयता का मानक अपने पालनहार से डरना, प्रेम करना और अच्छे कर्म करना है।

इस्लाम ने जब गैर बराबरी को समाप्त किया तो अरब के प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से मजबूत कबीले के सरदारों को इस्लाम के कमज़ोर, गरीब और दासता का जीवन बसर कर चुके हजरत बिलाल, हजरत सुहैब आदि हजारों ऐसे लोगों को साथ बैठा कर, एक ही बरतन में खाना खिला कर, प्रशासनिक ओहदे दे कर, इबादत में उन्हें बराबरी दे कर बल्कि उनकी अपने घर–खानदान में शादियां करा कर उन्हें प्रतिष्ठित किया और भेदभाव की जंजीरों को रेजा–रेजा कर दिया।

भारत में भी जो गुलाम वंश की हुक्मरानी कुतुबुद्दीन ऐबक, शमशुद्दीन अल्तमश और बलबन आदि के द्वारा हुई इसमें भी उस इस्लामी शिक्षा का प्रभाव था जहां मालिक और गुलाम का भेदभाव समाप्त कर दिया गया था, तभी तो बादशाह महमूद और उसके गुलाम अयाज के सम्बंध में नमाज में निहित बराबरी को ले कर ये शेर मशहूर हैः–

"एक ही सफ में खड़े हो गए महमूद व अयाज,
न कोई बंदा रहा और न कोई बन्दा नवाज़!!

इस्लाम धर्म के दूसरे खलीफा (उत्तराधिकारी) हज़रत उमर की इस्लामी फौज ने जब फिलस्तीन और बैतुल मकदिस ईसाइयों से छीन लिया तो ईसाइयों ने समझौते के लिये हजरत उमर को निमंत्रण भेजा, अतः हजरत उमर अपने गुलाम को साथ लेकर मदीने से निकले, ऊँट के रूप में सवारी एक थी, तय ये हुआ कि कुछ दूर ऊँट पर सवार हो कर

हज़रत उमर चलेंगे और गुलाम पैदल चलेगा फिर जब गुलाम थक जाएगा तो हज़रत उमर पैदल चलेंगे। इस तरह सफर तय हुआ यहां तक कि जब हजरत उमर संधि स्थल पहुंचने वाले थे तो गुलाम की सवारी पर बैठने की बारी थी, और गुलाम सवारी पर बैठा भी था, और हजरत उमर जो उस समय लगभग बाइस लाख वर्ग किलोमीटर के एरिया के सुल्तान बन चुके थे, सवार गुलाम के ऊँट की लगाम पकड़े हुए चल रहे थे, गुलाम को जब सन्धि स्थल के निकट पहुंचने की सूचना मिली तो लगा गुहार लगाने कि हुजूर आप सवारी पर बैठ जाइये, हम पैदल चलेंगे, आप खलीफ़ा हैं लोग क्या सोचेंगे, लेकिन हजरत उमर ने सख़्ती से मना कर दिया कि जो बात तय हुई थी उसी पर बात खत्म होगी, अब तुम्हारी बारी है तो ऊँट पर सवार तुम्हीं रहोगे, और ऐसा ही हुआ और फिर इतिहास ऐसी दुर्लभ घटना न लिख सका।

हज़रत मुहम्मद साहब ने दास प्रथा के उन्मूलन में सक्रिय हिस्सा लिया, यहाँ तक कि जब उनका अंतिम समय आया तब भी नमाज के अतिरिक्त उनसे यही कहते सुना गया कि गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उसके मामले में अल्लाह से डरो। वह कहते थे कि कोई नौकर तुम्हारे लिए खाना बना कर लाए तो कम से कम उसमें से लुकमा–दो लुकमा उसको खिला दो क्योंकि उसने खाना बनाने में आग की तपिश झेली है और खाना बनाने की कोशिश की है।

समता के इस भाव ने मालिक–गुलाम और अमीर–गरीब का भेद मिटा दिया, यहां तक कि इस्लाम ने पेशे को जो किसी बिरादरी और कथित जाति से सम्बंधित माने जाते थे उसको झुठलाया और उसकी तरफ प्रोत्साहित किया कि लोगों को जायज और हलाल कमाई के लिये कोई भी धंधा और कारोबार अपनाने में झिझक नहीं करनी चाहिए।

स्वतंत्रताः–

अब हम इस्लाम धर्म द्वारा दी गई स्वतंत्रता पर चर्चा करेंगे, जिसे इस्लाम ने प्रमुखता और तरजीह दी है, जब हजरत मुहम्मद साहब का अभ्युदय हुआ तो उन्होंने कई मुद्दों पर निरंतर मेहनत की और अपने सहचरों को इसके लिये तैयार किया, उसमें से एक मुद्दा महिलाओं की आजादी से सम्बंधित था, मौजूदा दौर में आज भी इस्लाम धर्म पर आरोप लगाया जाता है कि वह महिलाओं की आजादी छीनता या उन्हें कैद में रखता है जबकि वास्तविकता ये है कि मौजूदा दौर में महिलाओं की जो आजादी दिखाई पड़ रही है उसमें मुख्य भूमिका इस्लाम ने ही निभाई थी, कारण ये है कि हजरत मुहम्मद साहब के अभ्युदय से पूर्व अरबों में लड़कियों और बच्चियों को जिंदा दफनाए जाने की प्रथा थी, जिसे हजरत मुहम्मद साहब ने तुरंत खत्म करवाया। भारत में महिला विधवा हो जाय तो उसे जीने का अधिकार नहीं था बल्कि पति के साथ सती हो जाने की परम्परा थी। इसी प्रकार महिलाओं को पाप का दरवाज़ा और अपवित्रता का पुतला बताया जाता था, विवाह से पूर्व वह पहले बाप की मिल्कियत और फिर पति की संपत्ति समझी जाती थी, चूंकि वह एक सम्पत्ति थी तो वह अपनी जिंदगी की मालिक नहीं बन सकती थी और विरासत में कोई हक नहीं रखती थी, बल्कि बात तो यहां तक बिगड़ी थी कि यूनानी फिलॉसफरों

में इस पर बहस होती कि महिलाओं में इंसानों से कमतर और जानवरों से बेहतर आत्मा पाई जाती है और वह इन दोनों के मध्य एक अलग सृष्टि है। (पैगम्बरे आलम–96)

हजरत मुहम्मद साहब ने बताया कि ईश्वर–अल्लाह ने मर्द और औरत को एक माँ–बाप आदम और हव्वा से पैदा किया।इस्लाम ने औरत की हैसियत से उसे बेटी, पत्नी और माँ के रूप में पुरूषों से अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान दिया, उनको निकाह करने, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, माल व दौलत को खर्च करने, अपने विचार रखने, कुछ सिद्धांतों के साथ रोजी–रोटी कमाने की आज्ञा दी और उन्हें समाज में सम्मान दिलाया।

उन्नीसवीं सदी के मध्य तक यूरोप ने महिलाओं को विरासत में अधिकार नहीं दिया था। हिंदू धर्म में 1950 ई0 तक महिलाओं को विरासत में अधिकार नहीं मिले थे लेकिन इस्लाम ने प्रथम दिन से ही बेटी को माता–पिता के, माँ को सन्तान के और पत्नी को पति के छोड़े गए या बनाये गए माल में से अनिवार्य रुप से विरासत में हकदार बनाया और कई बार इनके अतिरिक्त रिश्तेदार महिलाओं को भी विरासत में अधिकार दिया।

माडर्न दौर में आज महिलाएं अपनी मर्जी से शादी कर रही है जबकि इस्लाम धर्म ने 14 सौ वर्ष पूर्व ही महिलाओं को ये अधिकार दे दिया था कि वह अपनी पसंद की शादी कर सकती हैं।

कुछ साल पहले भारत में ट्रिपल तलाक के बहाने मुस्लिम महिलाओं के नाम पर मुसलमानों को घेरने की कोशिश की गई थी और अंततः एक बैठक में तीन तलाक़ को अवैध करार दिया गया था। विचारणीय है कि क्या ऐसा करना ज़रूरी था? जबकि 2011 की जनगणना में मुस्लिम समाज में तलाक की दर 0.56 प्रतिशत और हिंदू समाज में 0. 76 प्रतिशत थी। दिलचस्प ये है कि भारतीय मुसलमानों में पाए जाने वाली तलाक़ पर न तो विधि आयोग और न सरकार ने कोई सर्वे किया था, केवल एक ज्ञात सर्वे बीएमएमए द्वारा किया गया था और ये सर्वे कितना सही या गलत था, रिसर्च का विषय है।

बहरहाल उस सर्वे के आधार पर 2014 में बीएमएमए को शरई अदालतों में तलाक़ के 219 मामले मिले, जिनमें 22 तीन तलाक़ से सम्बंधित थे। हैरत तो ये है कि तलाक़ के 40–57 प्रतिशत मामले में महिलाओं ने तलाक़ की खुद डिमांड की थी। (नेशनल हेराल्ड 29 जून 2017 ऑनलाइन)।

इसी तरह मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने देश के आठ शहरों से उसके मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में 2011 से 2015 तक के फैमिली कोर्ट से आरटीआई द्वारा मुस्लिम समाज के तलाक दर पर आँकड़े मांगे थे, जो चौंकाने वाले थे कि मुसलमानों में तलाक़ के मामले 1307, हिंदुओं में 16505, ईसाइयों में 4827 और सिखों में 8 आये। लेखक का स्वयं का रिसर्च है कि मेरे घराने और रिश्तेदारी में पिछले 35 सालों में महज एक तलाक़ हुई, वह भी महिला की डिमांड पर उससे "खुलआ" ली गई, ज्ञात रहे कि मुस्लिम महिला अगर अपने पति से तलाक़ मांगे और पति तलाक़ न दे तो इस्लाम में महिला को ये पावर "खुलआ" के माध्यम से प्राप्त है कि वह पति से तलाक़ ले ले।

.....जारी.....

फूँकों से यह चराग़ बुझाया न जायेगा

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

इस संसार के पैदा करने वाले अल्लाह ने जब से यह दुनिया बनाई और उसकी चीज़ों से फायदा उठाने और अपनी इबादत व उपासना के लिए इन्सानों को पैदा फरमाया, उस वक़्त से अब तक के इतिहास के अध्ययन से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि हक़ और बातिल, सही और ग़लत का टकराव हमेशा से रहा है वह हक़ और सच को हमेशा जड़ से उख़ाड़ फेंकने के लिए विभिन्न प्रकार से प्रयासरत रहता है वह कभी भी हक़ को सरबुलन्द होते देखना पसंद नहीं करता इसलिए वह खुले और छुपे अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आता, सूरः तौबा की आयत नं0 32 में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है ***''वह चाहते हैं कि अपनी फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें जबकि अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे''*** और यह हक़ीक़त भी रही है कि हक और सच के अलमबरदार, हक़ कहने, बोलने, लिखने वाले तादाद में हमेशा थोड़े रहे हैं और दिखने में भी कमज़ोर व बेबस नज़र आते रहे हैं लेकिन सत्य यह है कि देर सवेर ही सही, जीत और ग़लबा हमेशा हक और सच ही को हासिल हुआ है। जुल्म ज़ियादती अन्याय और गरीबों, अनाथों और असहायों की अंदेखी करने वाले अल्लाह की ज़मीन पर अकड़ कर चलने वाले हमेशा पराजित हुए हैं और उनका अंज़म हमेशा बुरा हुआ है क्योंकि घमण्ड करने वाले अल्लाह को बिल्कुल पंसद नहीं।

इतिहास के महारथी फिरऔन, हामान, नमरूद, शद्दाद, क़ाबील कुफ़्फ़ार मक्का, और हर काल के ज़ालिमों व इंसाफ़ के क़ातिलों के अंजाम से भलीभांति अवगत है उन्हें कुछ बताने की ज़रूरत नहीं।

इस्लाम एक सत्य और आख़री मज़हब है इसके रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 आख़री नबी व रसूल हैं, उनको जो किताब कुर्आन मजीद दी गयी वह आख़री किताब है। अब क़यामत (परलोक) तक आने वाले तमाम इन्सानों को आप सल्ल0 को अपना आइडियल और रहनुमा मानना होगा, इसीलिए आपके पूरे जीवन को आइडियल बनाया गया है अल्लाह का इरशाद है ***''और तुम सबके लिए आप सल्ल0 की ज़ात बेहतरीन आइडियल और नमूना है''*** लेकिन इन तमाम बातों के जानने बूझने के बावजूद वैश्विक स्तर पर इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने, उन्हें नीचा दिखाने के लिए नफ़रत की एक आँधी चलाई जा रही है जिसके मुज़ाहरे हिन्दुस्तान के अलग– अलग राज्यों में रोज़ सामने आ रहे हैं इस पर उनकी पीठ थपथपा कर ऐसा करने वालों का मनोबल और बढ़ाया जाता है। आजकल उत्तर प्रदेश में मुसलमानों को टार्गेट करके ग़ैर सरकारी मदरसों के सर्वे का शाही फ़रमान जारी कर ख़ौफ और डर का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है जिसकी वजह से पूरा अल्पसंख्यक समाज अपने इन मदरसों को लेकर चिंतित है, वह चिंतित क्यों न हो उसके साथ जो दोहरा मेयार अपनाया जा रहा है वह किसी से ढका छुपा नहीं, वह डरा हुआ

है कि कहीं ये देश को कामन सिविल कोड की ओर ले जाने की कड़ी तो नहीं, वह डरा हुआ है कि कहीं यह नई शिक्षा नीति और नये पाठ्यक्रमों द्वारा मदरसों को आधुनिक और बेहतर सुविधा मुहय्या कराने के नाम पर उनके मौजूदा इन्फ्रास्ट्रक्चर को उनकी मंशा पूरी न होने पर बर्बाद कर देने का मंसूबा तो नहीं, जैसा कि अभी आसाम में मदरसों पर बुल्डोजर चलाये जाने की खबरें आ रही हैं, इसलिए सरकार को आपसी संवाद के ज़रिये इस भ्रम की फ़िज़ा को ख़त्म करना चाहिए ताकि मदरसे शिक्षा के क्षेत्र में अपना जो योगदान दे रहे हैं वह सुकून व इतमीनान के साथ देते रहें, और संविधान से मिले उनके अधिकारों का हनन न हो, वह जिस तरह चाहें क़ानून के दायरे में रहते हुए अपने बच्चों के लिए दीनी माहौल और दीनी सभ्यता के साथ अपनी पंसद के इदारे क़ायम कर सकें और आसानी से उसे उन्नति की राह पर ले जा सकें।

और में अपने भाइयों से कहना चाहूँगा कि आप बिना डरे अक़लमंदी और समझ बूझ का सुबूत देते हुए हालात का मुक़ाबला करें, और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहें, और आपसी इख़्तिलाफात को पीछे छोड़ कर दीनी तालीम के साथ साथ आधुनिक शिक्षा की ओर क़दम बढ़ाएं। और यह ख्याल भी अपने दिल–दिमाग़ में बिठा लेना चाहिए कि इस्लाम को अल्लाह ने क़यामत तक के लिए पसंद कर लिया है और उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा भी ले लिया है बातिल उसको मिटाने के लिए चाहे जितने हाथ पैर मारे, चाहे जितनी उसके और उसके अनुयाईयों के खिलाफ़ साज़िश करे वह कभी कामयाब नहीं होगा, और इस्लाम सरबुलंद हो कर रहेगा, बस हमें अपनी हालत में सुधार करना होगा और हमें ईमान वाला बन कर दिखाना होगा। अल्लाह का इरशाद है– ***"तुम्हीं लोग ग़ालिब और सरबुलंद होगे बशर्ते कि तुम ईमान वाले हो"।***

अगर हमने अपनी ज़िन्दगियों में सुधार करके अपने अल्लाह और रसूल को राज़ी कर लिया तो ऐसा मुम्किन ही नहीं कि हालात न बदलें और अम्न व सुकून की वही पहले की फ़िज़ा क़ायम न हो।

नूरे खुदा है कुफ्र की हरकत पे खंदाज़न
फूँकों से यह चराग़ बुझाया न जायेगा

❖❖❖

अल्लाह के रसूल सल्ल0...

ला कर उन को अपनाने की दावत दें। अपने वतनी भाइयों को भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी से अवगत कराएं जिनके बीच हम रहते हैं, उनसे हमारे सम्बन्ध हैं पड़ोस के सम्बन्ध, व्यापार के सम्बन्ध, कारोबार के सम्बन्ध हैं। उनके सामने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र तथा अछूता अनुकरणीय जीवन आएगा तो वह समस्त भ्रम की बातें दूर होंगी जिन के सबब मुसलमानों के विरुद्ध पक्षपाती बरताव होता है और इस्लाम के गुणों को छिपा दिया जाता है।

हम को यह बात भली भांति समझ लेना चाहिए कि समाज में हमारा भला आचरण ही दूसरों को प्रभावित कर सकता है। यदि हमारा स्वभाव भला होगा तो दूसरे हम से प्रेम करेंगे। हमारा चरित्र बुरा होगा, हमारा स्वभाव अमानवीय होगा तो दूसरे हम से घृणा करेंगे।

अतः हम को चाहिए कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाएं अपने व्यवहार में ला कर अपने वतनी भाईयों को प्रभावित करें और समाज को शांति मय बनाएं अल्लाह हम को सामर्थ्य दे।

❖❖❖

पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० के अनमोल बोल

- वह मोमिन नहीं, जो अपने पड़ोसी को तकलीफ़ देता हो। (बुख़ारी)
- मोमिन ऐसा नहीं होता कि ख़ुद पेट भर खाये और उसका पड़ोसी भूखा रहे। (मिश्कात)
- मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी उसे दे दो। (इब्ने माजा)
- अल्लाह उस पर रहम नहीं करता, जो लोगों पर रहम नहीं करता है। (मुस्लिम)
- जो नरमी से महरूम हुआ, वह खैर से महरूम हुआ। (मुस्लिम)
- तुम में बेहतर वह व्यक्ति है, जिसका व्यवहार अच्छा हो। (बुख़ारी)
- ज़ुल्म क़यामत के दिन ज़ालिम के लिए सख़्त अंधेरा बनेगा। (मुत्तफक अलैह)
- ताक़तवर वह नहीं, जो दूसरे को पछाड़ दे, बल्कि ताक़तवर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने आपको क़ाबू में रखे। (बुख़ारी)
- जो तुम से रिश्ता काटे, उससे रिश्ता जोड़ो।
- मैं इसलिए भेजा गया हूँ कि अच्छे व्यवहार को पूर्ण कर दूँ। (मुस्नदे अहमद)
- जिसके अन्दर अमानत नहीं, उसके अन्दर ईमान नहीं। (मिश्कात)
- शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है। (इब्ने माज़ा)
- तुम अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार न करो। (तिरमिज़ी)
- अल्लाह की लानत हो, रिश्वत लेने और देने वाले पर। (बुखारी)
- मांगने वाले को कुछ दे कर ही वापस किया करो। (मिश्कात)
- अपने भाई के लिए वही पसन्द करो, जो अपने लिए पसन्द करते हो। (मुस्लिम)
- अपने आपको बुरे गुमान से बचाओ। क्योंकि बुरे गुमान से कही गई बात सबसे झूठी होती है। (बुखारी)
- जिसने एक बार अपनी ज़िन्दगी में अपनी माँ को हंसाया, उस पर जन्नत वाजिब हो गई।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क्या अक़ीदा रखना चाहिए?

उत्तरः हमें अक़ीदा रखना चाहिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे एक इंसान और अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह तआ़ला के बाद तमाम मखलूक़ में आप सबसे अफज़ल (सर्वश्रेष्ठ) हैं आप मअ़सूम हैं आप पर अल्लाह तआला ने कुर्आने मजीद उतारा। आप को अल्लाह तआ़ला ने एक रात आसमानों पर बुलाया और जन्नत और जहन्नम का मन्ज़र दिखाया, आप ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बहुत से मुअ़जिज़े (चमत्कार) दिखाए, आप अल्लाह तआला की बहुत ज़ियादा इबादत करते थे, आप के अख़्लाक़ (आचरण) बहुत ही आला (उच्च) दरजे के थे। आप को अल्लाह तआला ने गुज़री हुई और आने वाली बहुत सी बातों का इल्म अता फरमाया था। उन बातों को आप ने अपनी उम्मत को बताया था, आपको अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा इल्म अता फरमाया था। लेकिन आप आलिमुल ग़ैब (परोक्ष के ज्ञानी नहीं थे) आप ग़ैब की वही बातें जानते थे जिनको अल्लाह तआला ने आपको बताया था। आलिमुलग़ैब होना तो अल्लाह की सिफत है। आप खातमुन्नबिय्यीन हैं कि आपके बाद कोई नया नबी नहीं होगा। हां सिर्फ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो पहले ज़माने के पैगम्बर हैं आसमान से उतरेंगे और इस्लामी शरीअत की पैरवी करेंगे। आप इंसानों और जिन्नात सबके लिए रसूल हैं। आप सारे आलम के लिए और क़यामत तक के लिए सारे जिनों और इन्सानों के लिए रसूल हैं। आप क़यामत के दिन अल्लाह तआला की इजाज़त से गुनहगारों की शफाअत (अनुशंसा) करेंगे। अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफाअ़त कबूल फरमायेगा। आपने जिन बातों का हुक्म दिया है उन पर अमल करना और जिन बातों से रोका है उनसे रुक जाना और गुजरे हुए और आने वाले जिन वाक़ियात की खबर दी है उनको उसी तरह मानना और यक़ीन करना उम्मत पर ज़रूरी है यानि आपकी इताअत करना और आप की हर बात मानना उम्मत पर फर्ज़ है, आपसे मुहब्बत रखना और आपकी ताजीम करना हर उम्मती पर फर्ज़ है। मगर ताजीम शरीअ़त के हुदूद में हो।

प्रश्नः मासूम होने से क्या मुराद है?

उत्तरः मासूम होने से मुराद है कि जो मासूम हो उससे सग़ीरा और कबीरा (छोटा बड़ा) कोई गुनाह न हो, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मासूम थे उनसे कस्दन या सहवन (जानबूझ कर या भूले से) कोई न सगीरा गुनाह हुआ न कबीरा, तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम मासूम थे।

प्रश्नः हराम कामों से बचने और फर्ज और दीन के अनिवार्य कामों की पाबंदी करने में बीवी अगर अपने शौहर की बात न माने और शौहर की बातों को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करे तो क्या ऐसी सूरत में तलाक़ दी जा सकती है?

उत्तर: फर्ज और दीन के अनिवार्य कामों की अदायगी में बीवी लापरवाह हो और हराम कामों व बातों से न बचती हो और इस बारे में शौहर की हिदायत पर अमल भी न करती हो बल्कि मुसलसल नज़रअंदाज़ करती हो तो शौहर को हक हासिल है कि ऐसी बीवी को तलाक़ दे दे, फुक़्हा (बड़े बड़े मुफ़्तियों) ने लिखा है कि अगर औरत गुनाह के कार्य करने की आदी हो तो शौहर पर नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना वाजिब और अनिवार्य है इसके बावजूद औरत अगर दीन पर अमल न करे तो शौहर को तलाक़ देने का हक हासिल है।

(अल फिक़्हुल इस्लामी व अदिल्लतुहु 9/68)

प्रश्न: अगर बीवी शौहर की इजाज़त के बगैर नौकरी करे और शौहर के बार बार मना करने के बावजूद सिर्फ स्टेटस को बुलंद करने के लिए नौकरी करे तो क्या ऐसी औरत को तलाक़ दी जा सकती है?

उत्तर: नान व नफ़का अर्थात घरेलू खर्च की पूरी ज़िम्मेदारी अगर शौहर अदा कर रहा है इसके बावजूद सिर्फ स्टेटस को बुलंद करने के लिए बीवी नौकरी कर रही हो और उसके लिए शौहर की इजाज़त न हो और शौहर के रोकने की भी परवाह न करती हो तो ऐसी औरत को तलाक़ देना जायज़ है क्योंकि नौकरी के लिए शौहर राज़ी नहीं है और इससे शौहर के अधिकारों का हनन होता है जो शरीअ़त में गुनाह का अमल है इसी को देखते हुए तलाक़ की इजाज़त होगी।

(अल फिक़्हुल इस्लामी व अदिल्लतुहु 9/68)

प्रश्न: एक औरत के शौहर का देहांत हो गया, उन दोनों से बच्चे नहीं थे, शौहर ने काफी माल व जायदाद छोड़ी, लेकिन बेवा का निकाह उनके वालदैन ने दूसरी जगह कर दिया, पहले शौहर जो इंतेक़ाल कर चुके हैं उनकी जायदाद में इस औरत को हक़ हासिल है या नहीं? क्योंकि मरहूम के वालदैन और भाई बहन और दूसरे रिश्तेदार कह रहे हैं कि दूसरे मर्द से निकाह कर लेने की वजह से इस औरत को मरहूम के माल में हिस्सा नहीं मिलेगा, क्या दूसरा निकाह करने की वजह से पहले शौहर की वरासत में यह हिस्सा नहीं पायेगी?

उत्तर: दूसरा निकाह करने की वजह से वह औरत महर या वरासत से महरूम नहीं होगी बल्कि पहले मरहूम शौहर ने जो कुछ माल व जायदाद छोड़ा है उसमें वह एक चौथाई हिस्से की हकदार होगी।

(अल दुर्रुल मुखतार–1/529)

प्रश्न: एक व्यक्ति के तीन लड़के हैं, दो अल्लाह के फज़्ल से खुशहाल हैं, एक माली एतिबार से कमज़ोर है, और यही कमज़ोर लड़का अपने वालदैन की खिदमत करता है, वालिद की ख्वाहिश है कि अपनी जायदाद और मकान अपने ज़रूरतमंद लड़के को अपनी ज़िन्दगी में दे दें ताकि उसकी ज़रूरत भी पूरी हो और उसको खिदमत का बदला भी दुनिया ही में मिल जाय क्या ऐसा करना शरीअत के एतिबार से दुरुस्त है? क्या अल्लाह के नज़दीक कोई पकड़ तो नहीं होगी?

उत्तर: माँ–बाप की सेवा करना बड़ी नेकी का काम है, अल्लाह ने चाहा तो दुनिया व आखिरत दोनों जगहों में उसका अच्छा बदला मिलेगा, वालिद के लिए बेहतर यही है कि अपनी जायदादें तमाम औलादों में बराबर बराबर तक़सीम कर दें, हाँ अगर कोई लड़का ज़रूरतमंद और दूसरे खुशहाल हैं तो ज़रूरतमंद लड़के को जायदाद का कुछ हिस्सा या मकान दे

देने में कोई हरज़ नहीं है जब कि उनका इरादा सिर्फ ज़रूरतमंद लड़के की मदद करना है, दूसरे लड़कों को नुक़सान पहुँचाना नहीं है, इस सूरत में कोई गुनाह भी नहीं होगा। (फतहुल बारी 5/59)

प्रश्नः एक आम रिवाज यह बन गया है कि वलीमे या शादी के मौक़े पर मेहमान एक लिफाफे में कुछ रक़म रख कर मेज़बान को दे जाते हैं और मेहमान इसे एक ज़रूरी और रिवाजी काम समझते हैं, क्या इस रस्म की इस्लाम में कोई बुन्याद है?

उत्तरः यह कोई शरई अमल नहीं है, इसलिए अगर कोई व्यक्ति इसको शरई अमल समझे बगैर और किसी समाजी और अख़्लाकी दबाव के बगैर खुशी मन से हद्‌ये के तौर पर कोई रक़म दे दे तो इसकी गुंजाईश है क्योंकि शरीयत ने इसे हिबा और हद्‌या कहा है और हिबा और हद्‌या किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय अपनी खुशी व रज़ामंदी से किया जा सकता है (अल बहरुर्राइक 7/483) लेकिन अगर समाजी दबाव की वजह से इसको अनिवार्य समझने लगे या शरई आदेश का दर्जा देने लगे तो यह सही नहीं, अल्लाह के रसूल सल्ल0 के किसी अमल से इसका सुबूत नहीं मिलता कि आप सल्ल0 ने किसी वलीमे या दावत के मौक़े पर किसी को कोई रक़म पेश की हो, इसलिए इस क़िस्म के कामों से बचना चाहिए, क्योंकि इस तरह का अमल धीरे–धीरे समाज में लाजिम और अनिवार्य का दर्जा प्राप्त कर लेता है जो ठीक नहीं।

(मिरकातुल मफातीह 1/336)

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0.....

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने वहाँ एक बकरी को देख कर पूछा यह बकरी यहाँ कैसे खड़ी है? महिला ने कहा यह कमज़ोर है, अन्य बकरियों के साथ चरने नहीं जा पाती इसलिए घर में खड़ी है। हज़रत ने उसे दूहने की अनुमति चाही तो महिला ने कहा यदि तुम्हें इस में दूध दिखे तो दूह लो। मुहम्मद सल्ल0 ने बिस्मिल्लाह कह कर दूहना शुरु किया तो बर्तन भर गया। दो बार दूहने पर महिला को पिलाया, साथियों को पिलाया और स्वयं पिया। तीसरी बार दूहने पर दूध से भरा बर्तन महिला को सौंप कर आगे बढ़ गये।

कुछ समय बाद जब महिला का पति आया तो दूध से भरा बर्तन देख कर वह चकित रह गया। पूछने पर महिला ने सारा क़िस्सा सुनाया। पति बोला यह तो कुरैश परिवार का वही व्यक्ति जान पड़ता है जिसकी इन दिनों बहुत चर्चा है, माबद की माँ तनिक उसका हुलिया तो बता। तब महिला ने आप सल्ल0 का हुलिया इस तरह बतायाः– *''मैंने एक व्यक्ति को देखा जिसकी विद्वता स्पष्ट, जिस का मुखड़ा प्रकाशमान, जिसका शरीर सुडौल, पवित्र आकृति और आला स्वभाव, न मुटापे का भद्दापन, न दुबला बदन, न पेट निकला हुआ, न सर के बाल गिरे हुए, तेजस्वी चेहरा, स्वस्थ शरीर, कद सन्तुलित, अंजनशील बड़ी आँखें और पुतलियाँ काली, ढीले बहुत सफेद, पलकें घनी और लम्बी, स्वाभाव गम्भीर, बातों में मिठास, न कम बोलने वाले न बातूनी, बातें ऐसी जैसे शब्द, मोतियों की माला, संगी साथी आदेशों का पालन करने वाले, सेवा के लिए हर दम तैयार।''*

यह सुन कर पति ने कहा यह तो वही व्यक्ति है जिसकी मुझे तलाश है।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

पश्चिमी कौमों की घरेलू ज़िन्दगी और सोचने के अंदाज़ के कुछ नमूने और बहुविवाह की जरूरतः–

शादी के इतिहास के मशहूर यूरोपियन माहिर ''वेस्टरमार्क'' का बयान है ''सत्रहवीं सदी ईस्वी तक चर्च की तरफ से बहुविवाह की इजाजत मिलती रही'' और फिर उसने अनेक मिसालें गिनाईं। ''डायरमैट'' आयरलैंड के शासक की दो बीवियाँ थीं और दो लौंडियाँ ''शार्लमान'' की दो बीवियाँ थीं और बड़ी तादाद में लौंडियाँ।''

(अल–मरअतुः पृष्ठ–72)

डॉ० अब्बास महमूद अक़्क़ाद ने अपनी किताब ''अल–मरअतु फिल कुरआन'' में ये भी लिखा है कि ''कुछ ईसाई सम्प्रदाय तो बहुविवाह को ज़रूरी करार देते थे।''

(अल–मरअतु फिल कुरआन– पृष्ठः 82)

सबसे ज़ियादा अहम और इस्लाम की सच्चाई साबित करने वाला वाकिया सन् 1948 ई0 में पेश आया जबकि जर्मनी के ऐतिहासिक शहर ''मियूनिख'' जो अब ओलम्पिक के खेलों की वजह से बहुत मशहूर हो चुका है, में नवजवानों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन का एक सम्मलेन हुआ जिसमें विश्व युद्ध के नतीजे के तौर पर औरतों की असाधारण बहुलता और मर्दों की कमी पर लम्बे बहस मुबाहसे के बाद सभी मौजूद लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि बहुविवाह के अलावा इस मुश्किल का और कोई हल नहीं है लिहाजा परिषद ने इसी की सिफारिश की और उसके बाद अगले ही साल सन 1949 ई० में जर्मनी की राजधानी ''बॉन'' के निवासियों ने सरकार के जिम्मेदारों से मांग की कि देश के कानून में चंद बीवियां रखने की इज़ाज़त की धारा शामिल की जाए लिहाजा जर्मन सरकार ने पहले ''शैखुल अज़हर'' के पास बहुविवाह इस्लामिक प्रावधान का विवरण मालूम करने के लिए एक पत्र भेजा और उसके बाद एक प्रतिनिधि मण्डल रवाना किया।

(अल–मरअतु बैनल फिक्हः पृष्ठ–75)

पश्चिमी देशों में औरतों की असाधारण ज़्यादती ऐसी सच्चाई है जिसने पूरी सोसाइटी को प्रभावित बल्कि नैतिक रूप से तबाह कर दिया है और इस तबाही का असली कारण ये है कि वैध रूप से चंद औरतों से यौन संबंध को बुरा समझ कर या ये कहिये की इसकी जिम्मेदारियों से बचने के लिए अवैध रूप से तकरीबन हर व्यक्ति चंद औरतों से बल्कि बड़ी तादाद हर दिन एक नव औरत से यौन संबंध स्थापित करता और नाजायज बच्चों की कसरत और अविवाहित माओं की फौज पैदा करने का कारण बनता है। लिहाज़ा इस हक़ीक़त को तस्लीम, बल्कि इस पर अफसोस का इजहार, इंसाफ पसंद कुछ पश्चिमी बुद्धिजीवी भी कर रहे हैं एक फ्रांसीसी ओरिएंटलिस्ट जो बाद में मुसलमान बना ''नासिरुद्दीन दीनिया'' लिखता हैः–

सच्चाई तो ये है कि ''चंद बीवियों'' से संबंध एक ''सार्वभौमिक सत्य'' है जो रहती दुनिया तक मौजूद रहेगी चाहे

इसके खिलाफ क़ानून कितने ही बनाये जाएं और इस पर बनावटी प्रतिबंध कितने ही लगा दिए जायें, बस अब सोचने और तय करने की बात सिर्फ ये है कि कानूनी तौर पर एक सीमित संख्या से शादी करने की इज़ाज़त देना बेहतर होगा या इसी तरह बिना प्रतिबद्धता और ज़िम्मेदारी के छल कपट के रूप में छुप छुप कर यौन संबंध स्थापित करते रहना फायदेमंद होगा? इस ज़रूरत का एहसास और भी पश्चिमी संवेदनशील चिंतकों खास तौर पर उन पर्यटकों को हुआ है जिन्होंने मुसलमान देशों का टूर किया! मसलन एक मशहूर पर्यटक महिला ''लेडी मूजान'' ने ये तस्लीम किया कि मुसलमानों में चंद बीवियों के रिवाज़ की मौजूदगी नैतिक बिगाड़ और खराबियों के फैलने का इतना कारण नहीं बन रहा है जितना कि पश्चमी देशों में बिना इकरार किये चंद बीवियों से यौन संबंध बन रहा है अजीब बात है कि वो बहुविवाह को अवैध भी कहते हैं मगर इस हराम फल का मजा भी चखते हैं। ''इससे आगे बढ़ कर कुछ सत्यवादी यूरोपियन खुल कर बहुविवाह की क़ानूनी इज़ाज़त देने का मश्वरा देने लगे हैं जैसे मशहूर अंग्रेज़ी अखबार ''डेली मेल'' ने इस विषय पर एक लेख प्रकाशित किया और उस में साफ तौर से लिखा, इंग्लैंड में औरतों की संख्या मर्दों के मुकाबले में बहुत ज़ियादा है इस मुश्किल का एक मात्र हल और सफल इलाज सिर्फ ये है कि एक मर्द को चंद बीवियाँ रखने की (क़ानूनी) इज़ाज़त दे दी जाए (अल–मर अतु बैनल फिक्हपृष्ठः 227)

एक और फ्रांसिसी चिंतक ने बहुत ही हसरत और नदामत के मिले जुले एहसास के साथ लिखा हैः–

''ये खुली हुई हक़ीक़त है कि एक धनी फ्रांसिसी दो या उससे ज़्यादा औरतों से यौन संबंध तो स्थापित कर सकता है मगर छुप कर, लिहाजा उस व्यक्ति की हालत उस मुसलमान से कहीं कमतर होती है जो दो या ज़्यादा बीवियों से शादी करता है और उसे छुपाने की ज़रूरत नहीं पड़ती और इस फर्क का जरूरी नतीजा ये निकलता है कि ऐसे मुसलमान की सारी औलाद (सामाजिक और वैधानिक रूप से) समान हैसियत वाली होती है और वो मुसलमान उन सब को अपनी औलाद खुल्लम खुल्ला कहता है। इसके विपरीत उस फ्रांसिसी की वो औलाद जो गुप्त सम्बन्ध और गुप्त बीवी से पैदा हुई कानूनी तौर पर औलाद नहीं समझी जाती।''

इस अप्राकृतिक बल्कि कहना चाहिए, प्रकृति से लड़ने वाले कार्यशैली का एक प्राकृतिक नतीजा ये निकला कि वहाँ गंभीर औरतें भी इस परिस्थिति से उकताने लगीं और सैकड़ों मर्दों की हवस का शिकार बनने के बजाए एक मर्द की दूसरी बीवी बनने को वरियता देने लगीं हैं लिहाजा कुछ यूरोपियन देश खासतौर पर जर्मनी महिला संगठन की तरफ से खुल कर मांग की जाने लगी कि एक से ज़्यादा बीवियां रखने की इजाजत दी जाए।'' और वहाँ के समाचार पत्रों में यूरोपियन औरतों के ऐसे ऐसे पत्र प्रकाशित हो रहे हैं जिन में चंद बीवियां रखने की इजाजत की मांग हो रही है। और इसी को जिन्दगी गुज़ारने का सम्मान पूर्वक तरीका कहा जा रहा है यहां सिर्फ एक पत्र का अनुवाद प्रस्तुत है जो ''लंदन ट्रूथ'' में प्रकाशित हुआ था।

''हमारी लड़कियों की आवारगी बहुत बढ़ती जारही है। और पानी सर से ऊंचा होने लगा है लेकिन लोगों को इसके कारण तलाश करने की तरफ कम ध्यान है, मैं भी क्योंकि इसी लिंग से संबंध रखती हूँ इसलिए लड़कियों की इस बुरी हालत से दिल टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है। मगर दुखी होना तो इसका इलाज नहीं जब तक इस गंदगी को हटाने के लिए कोई व्यावहारिक कदम न उठाया जाए, ख़ुदा भला करे एक बड़े स्कॉलर (टॉमस) का कि उन्हों ने रोग को भी सही पकड़ा और उसका राम बाण इलाज भी बताया। और वो ये है कि ''एक मर्द को चंद बीवियां रखने की इजाज़त दे दी जाए।'' इस तरीक़े से तो निश्चित रूप से ये मुसीबत टल सकती है और हमारी उदण्ड और अवारा गर्द लड़कियां ''घर वालियां'' बन सकती हैं खुलासा ये कि सबसे बड़ी एक ही मुसीबत है वो है एक योरोपियन मर्द को एक ही बीवी रखने पर मजबूर करना।''

(अल–मर अतु बैनल फिक़्हि पृष्ठ:82)

.........ज़ारी..........

❖❖❖

एक यादगार नअ़त

अल्लाह के अन्तिम नबी और सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की प्रशंसा में गद्य और पद्य के रूप में हज़ारों पंक्तियाँ लिखी गईं। कविता की परिभाषा में ऐसे पद्य को ''नअ़त'' कहते हैं। यहाँ पर ऐसी नअ़त प्रस्तुत की जा रही है जिसे हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी ने पसन्द फरमाया था–

सरताजे रुसुल मक्की मदनी सरकारे दो आलम सल्ले अला
नबियों के नबी उम्मी लक़बी, सरकारे दो आलम सल्ले अला
कोई हबशी कोई अ़जमी कोई अरबी, कोई क़रनी
ये आतिशे ग़म किस किस को लगी, सरकारे दो आलम सल्ले अला
यह हुस्न की सारी बुल अजबी, ये बूज़री और वह बूलहबी
वाबस्ता कोई, बरगश्ता कोई, सरकारे दो आलम सल्ले अला
हो जाए इधर भी चश्मे करम, ऐ ख़ुस्रुवे ख़ूबाने आलम
वाबस्त–ए–दामन हैं हम भी, सरकार दो आलम सल्ले अला
ये दिल की जलन, आँखों की नमी सदक़े में तुम्हारे हम को मिली
क्या दौलते उज़्मा हाथ लगी, सरकारे दो आलम सल्ले अला
घुट्टी में पड़ा है इश्क़े नबी, कामिल है हयात उससे अपनी
है मेरी दवा–ए–दर्द दिली, सरकारे दो आलम सल्ले अला

❖❖❖

(नोटः बुल–अजबी=आश्चर्य जनक, वरगश्ता= विरोधी, ख़ुस्रुवे–ख़ूबाने आलम=दुनिया के हसीन लोगों के बादशाह)।

मोमिन की जाये पनाह

हज़रत मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 — आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी

नमाज़ मोमिन के लिए उस मुहब्बत करने वाली माँ से भी ज़ियादा पनाह लेने, सर छुपाने और आराम पाने की जगह और उसकी गोद से भी ज़ियादा चैन व सुकून पाने की जगह है जो एक यतीम, कमज़ोर व आ़जिज़, बे सहारा और लाडले बच्चे के लिए हर वक़्त खुली रहती हैं, और जब बच्चे को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ और नुक़्सान का खतरा होता है, कोई उसको तकलीफ़ देता है और परेशान करता है, या उसको भूक और प्यास सताती है, या वो किसी चीज़ से डर जाता है, तो फ़ौरन माँ से चिमट जाता है, और उसकी गोद में बैठ कर समझ लेता है कि वो सबसे महफ़ूज़ हो गया, इसी तरह नमाज़ भी मोमिन की सबसे बड़ी पनाहगाह और जाये क़रार है, यह वह मज़बूत रस्सी है जो उसके और उसके रब के दरमियान फैली हुई है, वह जब चाहे उस रस्सी को मज़बूती से थाम कर अपनी हिफ़ाज़त की ज़मानत हासिल कर सकता है, ये उसकी रूह की ग़िज़ा, दर्द का दरमाँ, ज़ख़्म का मरहम, बीमारी से शिफ़ा और उसका सबसे बड़ा हथियार और सहारा है।

अल्लाह तआला सूरे बकरा आयत नं0 153 में इरशाद फरमाता है ''ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है''

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 को किसी ख़ास मसले का सामना होता था तो आप सल्ल0 नमाज़ की तरफ़ तवज्जो फ़रमाते थे, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई परेशानी पेश होती तो फौरन नमाज़ के लिए खड़े हो जाते थे। ◆◇◆

शरीर में पानी की कमी से हो सकती हैं अनेक बीमारियाँ

इदारा

आज की भाग दौड़ भरी ज़िन्दगी में सेहत के प्रति जागरूकता में कमी आई है और इस वजह से खान पान और रहन–सहन में लापरवाही के कारण लोग कई तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। इलाज काफ़ी मंहगा होने के कारण बहुत से लोगों का बजट भी बिगड़ रहा है। बदलते मौसम के साथ रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कुछ चीज़ों का ध्यान रख कर बीमारी से बचा जा सकता है। जैसे गर्म होते मौसम में इस बात का पूरा ख्याल रखना चाहिए कि शरीर में पानी की कमी न होने पाये। घर में छोटे बच्चों पर ख़ास तौर से ध्यान देना चाहिए क्योंकि वह खेलने में इतना मगन हो जाते हैं कि पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं पीते। बदलते मौसम में फ़्रीज का ठंडा पानी पीने से बचना चाहिए। शरीर में पानी की कमी होने से कई तरह की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। डिहाइड्रेशन, बुख़ार लीवर में इंफेक्शन आदि होने की संभावना रहती है। शरीर में पानी की कमी के कारण उल्टी, दस्त, पेट दर्द, बुख़ार आदि होना आम समस्या है। ठंड में लोग कम पानी पीते हैं। उनकी यह आदत मौसम में बदलाव के समय भी बनी रहती है, जिसका स्वास्थ्य पर असर पड़ना स्वाभाविक है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से लीवर सही रहता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, लेकिन यहां इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि सेहत के लिए लाभदायक मान कर ज़रूरत से ज़ियादा पानी पीना नुक़सानदेह होता है। शरीर को जितनी ज़रूरत हो उतना ही पानी पीना चाहिए।

डॉक्टरों के मुताबिक इन्सानी शरीर में 30 प्रतिशत हिस्सा तरल है और बाक़ी 70 प्रतिशत में अस्थि और मज़्जा है। इन्सान बिना खाने के कुछ दिनों तक रह सकता है लेकिन बिना पानी के रहना उसके लिए मुमकिन नहीं यही कारण है कि गर्मी के मौसम में डिहाईड्रेशन के मरीज़ों की संख्या अचानक बहुत बढ़ जाती है। लापरवाही के कारण हर साल गर्मियों में अनेक डिहाईड्रेशन मरीज़ों की मौत हो जाती है। तेज़ गर्मी में बहुत से लोग प्यास बुझाने के लिए कोल्ड ड्रिंक, सोडा आदि पीने लगते हैं। इस तरह के पेय शरीर को बहुत नुक़सान पहुँचाते हैं। उनसे लीवर और हड्डियों को पोषक तत्व नहीं मिल पाते। अगर अपने व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा सा समय अपने स्वास्थ्य के लिए दें तो पानी की कमी से होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है। सबसे पहले इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शरीर में पानी की कमी न होने पाये उसके लिए यह जानना ज़रूरी है कि पानी की कमी होने के क्या लक्षण होते हैं। पानी की कमी के कारण सीने में हल्की जलन, पेट में एसिडिटी या असहजता हो सकती है। साथ ही मुँह से साँसों के साथ लगातार दुर्गन्ध आती है। ब्रश करने के बाद भी सांसों की दुर्गन्ध पूरी तरह नहीं जाती। इसके अलावा पेशाब गाढ़े पीले रंग का आता है, पेशाब में जलन, इंफेक्शन आदि की समस्या हो सकती है। शरीर में पानी की कमी होने पर होंठ और जीभ बार–बार सूखने लगती है होंठ की बाहरी त्वचा फटने लगती है।

शेष पृष्ठ ...40.. पर...

जायका बढ़ाए और सेहत बनाए करी पत्ता

डॉ0 मनीराम, राजकीय युनानी कॉलेज, लखनऊ

करी पत्ता यानी मीठी नीम भारतीय खान–पान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे इसकी सुगंध के लिए जाना जाता है। करी पत्ता खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद माना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार, करी पत्ते में कई ऐसे स्वास्थ्यवर्धक गुण पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में राहत दिला सकते हैं। करी पत्ता विटामिन ए, बी, सी, कैल्शियम, प्रोटीन, एमिनो एसिड, फॉस्फोरस, फाइबर और आयरन का समृद्ध स्रोत है।

वजन घटाएः–

करी पत्ता शरीर को अंदरूनी रूप से साफ करने में मदद करते हैं और हानिकारक विषैले पदार्थों को हटाने का काम करते हैं। ये पत्ते शरीर में आवंटित वसा और कार्बोहाइड्रेट को भी जलाते हैं, जिससे वजन कम होता है।

घाव जल्द भरेः–

करी पत्ते में जीवाणुरोधी गुण होते हैं, जो न केवल घावों को जल्दी भरने में मदद करते हैं बल्कि संक्रमण के खतरे को भी कम करते हैं।

करी पत्ते का सेवन शरीर को कई समस्याओं से दूर रख सकता है। लेकिन आपको कोई गंभीर समस्या है तो अपनी डाइट में करी पत्ते को शामिल करने से पहले एक्सपर्ट की सलाह जरूर लें।

हार्ट अटैक का खतरा कम करेः–

शरीर के ऑक्सिडेटिव कोलेस्ट्रॉल, खराब कोलेस्ट्रॉल को बनाने में मदद करते हैं, जिससे हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। करी पत्ते में ऐंटीऑक्सिडेंट गुण होते हैं जो कोलेस्ट्रॉल का ऑक्सिकरण होने से रोक देते हैं, जिससे शरीर में खराब कोलेस्ट्राल की मात्रा बढ़ नहीं पाती है। इस तरह से यह दिल से जुड़ी परेशानियों से दूर रखने में मदद करता है।

बालों को झड़ने से रोकेः–

करी पत्ता बालों को मजबूत बनाता है। इसमें विटामिन बी 6 होता है, जो बालों को झड़ने से रोकता है। हेयर ऑयल में करी पत्ता पाउडर मिला कर इसका लाभ लिया जा सकता है।

इनमें भी फायदेमंदः–

- ब्लड शुगर के स्तर को प्राकृतिक तरीके से नियंत्रण करने के लिए करी पत्ते को आहार में शामिल करना चाहिए।
- करी पत्ता कार्बोहाइड्रेट और मेटाबॉलिज्म को प्रभावित करता है और तनाव को भी कम करने में मदद करता है।
- ऐंटी बैक्टीरियल गुणों के कारण यह त्वचा के संक्रमण से भी बचाने का काम करता है। ◆◇◆

शरीर में पानी की कमी....

पानी की कमी होने पर गला सूखता है। बार– बार पानी पीने के बाद भी प्यास नहीं मिटती है। शरीर में पानी कम होने की एक पहचान यह है कि त्वचा बहुत रूखी और बे जान हो जाती है। जो लोग लंबे समय से कम पानी पीते हैं उनकी त्वचा पर झुर्रियाँ आ जाती हैं वहीं मांस पेशियों में दर्द, ऐंठन और जकड़न की समस्या हो सकती हैं। सर में दर्द, सुस्ती आदि हो सकती है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

शिनजियांग में उइगर मुस्लिमों पर अत्याचारः–

संयुक्त राष्ट्र/बीजिंगः चीन के शिनजियांग प्रांत में उइगर मुस्लिमों पर अत्याचार को लेकर संयुक्त राष्ट्र की जिस रिपोर्ट का लंबे समय से इंतजार हो रहा था, वह जारी हो गई है। रिपोर्ट में यूएन ने चीन पर मानवाधिकारों के गम्भीर उल्लंघन का आरोप लगाया है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि चीन में उइगर मुस्लिमों और दूसरे एथनिक अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहा है। हालांकि चीन इससे इनकार करता रहा है। जांचकर्ताओं का कहना है कि उन्हें अत्याचार के 'विश्वसनीय सबूत'' मिले हैं जो ''मानवता के खिलाफ अपराध'' की तरह हैं।

तेल बेचने वाले सऊदी अरब के हाथ लगा एक और 'खज़ाना':–

सऊदी अरबः (Saudi Arabia) दुनिया का सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। ये देश कई और देशों की तेल की ज़रूरतों को पूरा करता है। मगर अब यहां पर एक नई तस्वीर देखने को मिल रही है। ये देश तेजी से बदलाव के रास्ते पर है और वजह इस बार तेल नहीं बल्कि कुछ और है।

सऊदी अरब का प्रॉपर्टी मार्केट अब इनकम के लिए सबसे बड़ा साधन बनता जा रहा है। दुनिया के कुछ हिस्सों में ऊर्जा की कीमतों में तेजी आने के बाद अब देश की अर्थव्यवस्था में भी बदलाव हो रहा है। पिछले दिनों रियाद के नये अब्दुलसलाम अलमाजेद में 300 अपार्टमेन्ट्स धड़ल्ले से बिक गये हैं। सिर्फ एक महीने में लोगों ने कैश दे कर घर खरीदे और वह भी तब जब इसका विज्ञापन जारी भी नहीं हुआ था। एक अपार्टमेंट की कीमत एक लाख रियाल (करीब 2 करोड़ रूपये) थी और इसके बाद भी इन्हें खरीदने में लोग ज़रा भी नहीं हिचके। दुनिया का सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश अब प्रॉपर्टी का भी बड़ा बाज़ार बनता जा रहा है।

फीता काटते ही ढह गया पुलः–

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में फीता काटते हुए ही पुल ढह गया। स्थानीय लोगों को नदी पार करने में मदद के लिए यह छोटा पुल बनाया गया था। जैसे ही महिला अधिकारी फीता काटने के लिए कैंची निकालती हैं, लोगों के दबाव में पुल बीच से टूट जाता है। सुरक्षाकर्मी तुरंत महिला को गिरते पुल से घसीटते हैं। सोशल मीडिया में घटना का वीडियो वायरल है। (एनबीटी)

38 मिनट बिना पीएम के रहा ब्रिट्रेनः–

इतिहास में पहली बार सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया लंदन के बकिंगम पैलेस के बजाय सबर्डीनशर स्थित शाही परिवार के ग्रीष्मकालीन आवास बालमोराल कासल में हुई। स्कॉटलैंड में बोरिस जॉनसन ने क्वीन एलिजाबेथ–11 को इस्तीफा सौंपा। इसके 38 मिनट में जॉनसन इस्तीफा दे चुक थे और लिज ने शपथ नहीं ली थी, इसलिए इस दौरान ब्रिटेन का कोई प्रधानमंत्री नहीं था। ◆◇◆

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 ______ تاریخ ______

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—:तअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 08

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983